

श्री आत्मकमल लब्धिसूरीश्वरेभ्यो नमः

नूतन स्तवनावली
सज्जाय-गहुंली-संग्रह



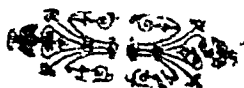
रचयिता—

पू पा. जैनाचार्य श्रीमद
विजयलब्धिसूरीश्वरजी महाराज

मुद्रक व प्रकाशक
जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा
जैनबन्धु प्रिंटिंग प्रेस, पीपली बाजार इन्दौर

प्रथमावृत्ति
२०००

१९३९
सं. १९९५



प्रस्तावना.

आजकल जहां देखते हैं वहां पर जन समूह संगीत के शोखमें बढता जा रहा है शृंगार रसवाले नाटकीय गायनोंको सीखकर जन समूह विषय-कषाब के रस्ते पर मंचरते हैं उनको सराव मार्ग से बचाने के लिए सुंदर और सरल भाषामें रचे हुए पद्यबंध जो धर्म क्षेत्रमें विचरने के प्रेरणात्मक हों उनको जरूरीयात मालुम होते जैनरत्न कलिकुल कीरीट आचार्य देवको बहोत विनंतीए होने पर उन परोपकारी महात्माने समयोचित आवश्यकता को पूरी पाडी है. ये स्तवन भक्ति पूर्ण भाविकों रूप भमराओंके लिए श्रीजिन प्रतिमा रूप कमलीनी सुगंधीदार अमी द्रष्टि रूपी सुवासित और मधमधती

सुश्रोत्रो को हृदय पटके अंदर प्रवेश कराने के लिए उत्तम साधनभूत है. गीत गान और नृत्य के साधनों द्वारा प्रभुप्रत्ये भक्ति रसमें तन्मय बना देनेमें ये स्तवन इलक्कट्टीक पावरकी तरह अजय शक्तिशाली हैं.

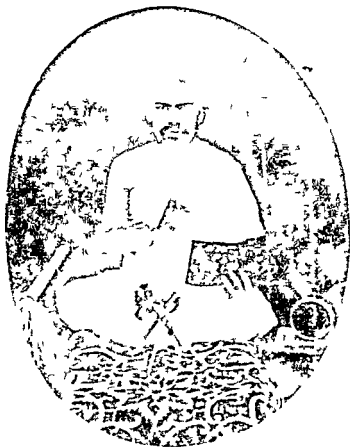
इन स्तवनों आदि का हेतु यही है कि नाटकीय गायनोंको सीखकर विषयादि में प्रातिदिन आगलवधती जैन जनता अटके और वीतराग देवकी भक्तिमें चित्त को लगावे. स्तवनों के अलावा वैराग्य को प्राप्त करानेवाली थोड़ीसी सज्झाय भी इस पुस्तक में डालनेमें आई है तथा मुनि श्री कीर्तिविजयजी महाराज की रचीहुई नये और पुराने रागकी आनंद को प्राप्त कराने वाली आखिर में गहुंलीओंका संग्रह भी करने में आया है ।

प्रकाशक,

पू पा. श्रीमद् विजयलब्धिसूरीश्वरजी महाराज.



पृ. पा. श्रीमद् विजयलक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज



ॐ अहम ।

नूतन स्तवनावली.



(१) प्रभुगीत

आव्यो दादाने दरवार, करो भवोदधि पार;
सरो तु छे आधार, मोहे तार तार तार.
आत्मगुणनो भंडार, तारा महिमानो नहि पार;
देख्यो मुदर देदार, करो पार पार पार.
तारी मूर्ति मनोहार, हरे मनना विकार;
सरो हैयानो हार, वदु वार वार वार.
आव्यो देरामर मोक्षार, कर्यो जिनवर जुहार;
प्रभु चरण आधार, सरो सार सार सार
आत्मकमल सुधार, तारी लब्धि छे अपार;
एनी सुनीनो नहि पार, विनति धार धार धार.

(२) सिद्धाचल-आदिजिन स्तवन

(राग-काली कमलीवाले तुमपै)

सिद्धगिरिपर आदि प्रभुको प्रातः प्रणाम
(अंचली)

तुं स्वामी में दीन हूं प्यारा,
तेरे विन मुझ नहि निस्तारा;

आया तुम दरवार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० १

जहान भरमें तीरथ उदारा,
भव्य हृदयका यही सतारा

तीरथ तारणहार,
प्रभुको प्रातः प्रणाम. सिद्ध० २

दिलचस्प दिलवर दिलधारा,
तबसे दिलका हुवा सुधारा;

बंदगी चारंचार,

प्रभुको प्रातः प्रणाम, सिद्ध० ३

ये गिरि मेरे नैन का तारा,

गुण मोतनका ये मुझ हारा;

केवल कमलाकार,

प्रभुको प्रातः प्रणाम, सिद्ध० ४

लास चौरासी योनि वारे,

कर्म सरलको ए गिरि जारे;

ये गिरि मुज दिलदार,

प्रभुको प्रातः प्रणाम, सिद्ध० ५

आत्मकमलमें गिरि गुण गाना;

लब्धि सूरि यात्रा फल पाना;

सर्व तीरथ सिरदार,

प्रभुको प्रातः प्रणाम सिद्ध० ६

(५) चारुपमंडण श्री पार्श्वजिन स्तवन
(राग-पंजाबी भैरवी)

पार्श्वप्रभु मोहे देदो शरण.

देदो शरण प्रभु देदो शरण. पार्श्व० १
चारुपमंडन सबी *अघखंडन,

भविक जनोंको मोदकरण, पार्श्व० २
वीतराग तुं मोहनगारा,

यही विरोध मोहे विस्मयकरण. पार्श्व० ३
मोहनी मूरत तोरी है न्यारी,

राग-द्वेषको करती हरण, पार्श्व० ४
दूषम काले ज्योति स्वरूपी,

दर्शन प्रभुका है तारण-तरण: पार्श्व० ५
आनंदकारी भवदुःखवारी,

पुण्ये मिले प्रभु पार्श्व चरण. पार्श्व० ६

दु ख दोहग तुम नामे नासे,
 कंठे धरे होय कर्म जरण. पार्श्व० ७
 आत्म कमलमां-लब्धि लहेरो,
 मिल गये टले जन्म मरण. पार्श्व० ८

(६) थंभण पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-नागर बेलीयो रोपाय)

प्रेम धर्मनो जगाव, तारा शुद्ध चित्तोमां;
 प्रभु पार्श्वजी वसाव, तारा शुद्ध चित्तोमा १
 थंभण पार्श्वजिनजीप्यारा, छे रागद्वेषथी न्यारा,
 तारा कर्मने हटाव, जाइ शिव महेलोमा. २
 तुं चार गतिमां रुख्यो, जो धर्म भावना भूल्यो;
 सुंदर भावना जगाव, तारा शुद्ध चित्तोमा. ३
 जीव पुण्य उदय अहीं आव्यो, वळी
 मिथ्याभाव वमाव्यो;

(८)

जिनराज धर्म सुहायो, तारा शुद्ध चित्तोमां. ४
रहो नित्य नाम जिन रटता, हटशे हृदयनी
जडता;

सुख जामशे अनुपम तारा शुद्ध चित्तोमां. ५
निज चित्त ठामजो आवे, लब्धि आत्म-
कमलमां जागे;

गुणगणो अति उभराशे, तारा शुद्ध चित्तोमां ६

(७) महावीर प्रभु स्तवन.

(राग-फीरोशीकी तमन्ना.)

आहा! केवुं भाग्यजाग्युं, वीरनाचरणो मल्या;
रोग-शोक दारिद्र सघळां, जेहथी दूरे टल्यां
आहा० १

फेरो फर्योछे दुरगतिनो, शुभगति तरफेणमां;

अल्पकाले मोक्ष पामी, विचरशुं आनंदमां.

आहा० २

जेमना तपनो न माहिमा, करी शके शकेशभी X

तेमने हु स्तवु शु बालक, शक्तिनो ज्या

लेश नहीं आहा० ३

कामधेनु कामकुंभ, चिंतामणी तुं मल्यो;

आज मारे आंगणे श्री, वीर कल्पतरु

फल्यो. आहा० ४

लब्धिना भंडार व्हाला, वीर वीर जपतां थयां;

गौतम श्री मोक्ष धामी, ए प्रभुनी रागी

दया. आहा० ५



(८) श्रीमहावीर जिन स्तवन.

(मथुरामां खेल खेली आन्या-ए राग)

वीर तारुं नाम व्हालुं लागे हो श्याम
 शिवसुखदाया. (अंचली.)

क्षत्रियकुंडमां जन्म्या जिणदजी;
 दिगूकुमरी हुलराया, हो, स्वाम. शिव० १
 माथाना मुगट छो आंखोना तारा,
 जन्मथी मेरु कंपाया, हो स्वाम. शिव० २
 मित्रोनी साथे रमत रमतां,
 देवे भुजंग रूप ठाया हो स्वाम शिव ३
 निर्भय नाथे भुजंग फेंकी,
 आमल क्रिडाने सोहाया, हो स्वाम. शिव० ४
 महावीर नाम देव नाथे त्यां दीधुं,
 पंडित विस्मय पास्या हो स्वाम. शिव० ५

चाग्रि लइ प्रभु कर्मो हटाइ,
 केवलज्ञान प्रगटाया, हो स्वाम शिव० ६
 हिंसा मृषा चोरी मैथुन वारी,
 परिग्रह बूरा बताया, हो स्वाम शिव० ७
 आत्मरुमलमां शैलेशी साधी,
 शिवलब्धि उपाया, हो स्वाम. शिव० ८

(९) महावीरस्वामी स्तवन.

(राग-प्रभुजी तुमारे दरबार.)

मैं कैसे आवुं प्रभुजी तुमारे दरबार
 (२) (अंचली.)

मैं हुं रागी तु है निरागी,
 मैं हू बड़ा ही गुन्हेगार. मैं० १
 वीर प्रभु तुं गुण गण धारी,
 मुजमें अगुण है हजार. मैं० २

गुण प्रेमीनी तृषा हरे,

शुभ कांति हो तो आवी हो. मूर्ति० ३
दिलवर हमने जीवाडी,

अमर ए करशे सही;

आत्म--कमल--लब्धि तणी,

प्रेमाळ हो तो आवी हो. मूर्ति० ४

[११] सीमंधर स्वामी स्तवन.

(राग-प्रभातीआनो,)

शृणुत सीमंधरा, प्रणमी निज कंधरा;

वळी वळी तुज चरण सेवमागुं. शृणुत० १

प्रभु चरण सेवना, लभी शके देवना;

अनधिकारी अभव्य अभागुं. शृणुत० २

करमदळ चूरवा निज गुणो पूरवा;

प्रह उठी प्रतिदिने पाय लागूं. शृणुत० ३

कर कृपा दास पर, दुःख वधा नाश कर.
 सुख दियो मोक्षनुं में अथागुं. शृणुत० ४
 कमल मृज आतमा, खोल परमात्मा;
 सकल लब्धि भावे हुं जागुं. शृणुत० ५

[१२] सामान्य जिनपद.

✓ (राग-भेरे मौला वृजादे)

मेरी अरजी उपर प्रभु ध्यान धरो,
 मेरे दिलके ये दर्द तमाम हरो.

शेर.

कभी आधी कभी व्याधी, कभी उपाधी
 आती है,
 सेवा जिनराजकी माची, तीनोंकी नड
 उडाती है;

मेरी लाख चोराशीकी पीर* हरो, मेरी०
शेर.

ज्ञान चाहुं ध्यान चाहुं, मस्त आत्म भावमें;
जैसे बने वैसे करो, हो दिल निज स्वभावमें;
मेरा नूर मुझे बक्षीस करो. मेरी०

शेर.

तुंही त्राता तुंही आता, तुंही रक्षणकार है;
तुंही ब्रह्मा तुंही त्रिष्णु, तुंही तारणहार है.
मेरी डुबत X नैयाको पार करो मेरी०

शेर.

पूरब फिरा पश्चिम फिरा, दक्षिण फिरा उत्तर
फिरा;

देखा नहीं दरबार ऐसा, चमकता आत्म
हीरा.

(१७)

मेरा ज्योतिसे ज्योत मिलान करो मेरी०
शेर,

तुं जुदा नही में जुदानहीं और कोई जुदानहीं;
पर्दा उठे जो कर्मका, तो भरम सब भागे सही;
प्रभु वोही करमपट बूर करो. मेरी०
शेर,

आतम- कमलमें है भरी, खूब खूबीयो
जिनराजजी;
लब्धि विकासी नाथ मेरे, सारो सधरे काजजी
मेरे ब्रान खजानेको खूब भरो. मेरी०

१३ श्री महावीर स्तवन.

(धन्य धन्य वो जगमें नर नार ए चाळ)

भजले महावीर भगवान,
भयमे पार लगानेवाले;

सिद्धारथ कुल-नभ चंद,
 राणी त्रिशला के है नंद;
 काटे जन्म मरण के फंद,
 मोक्षके द्वार-पहुंचानेवाले भज० १
 शक इंद्र दिलमें आया,
 तब मेरु प्रभुने हीलाया;
 ताकात है जिनकी अपार,
 जन्मसे मेरु चलानेवाले भज० २
 क्षत्रियकुंड नगर मोझार,
 लिया जन्म प्रभुने धार;
 तारे हैं लोक अपार,
 मोक्ष पावामें पानेवाले, भज० ३
 जो स्मर लेवे जिनराज,
 वो रखे उनकी लाज;

सब पूरण करदे काज,
 कर्म-जडेको ऐ हटानेवाले. भज० ४
 जवुपुर नगर विशाल,
 सोहे जिनमंदिर नाल;
 मूलनायक है प्रतिपाल,
 ज्ञान "लब्धि" के पानेवाले भज० ५

१४ आवुतीर्थ आदि जिन स्तवन (राग-तेड्डु ४थुं किरतारतु)

आवु पर दिल कातु आवे,
 आदि जिनपर ध्यान से;
 नाथ नेमिको त्रिलोकत,
 मुक्ति लो सन्मान से (अंचली)
 कर्म कोरणी कोरणी को,
 देख दिल मुग्ध है यहाँ;

पार्श्व महावीर को निहारो,
शान्ति भेटो चाहसे. आबु० १
अचलगढके मंदिरों में,
मूर्तियां निहाल कर;
स्वर्णमयीसी तृप्त हूवा,
दर्श अमृतपानसें. आबु० २
पुण्यशाली इस जगतमें,
विगल आदि हो गये;
क्रोडो रुपैये सहां लगाके,
रचे मंदिर मानसे. आबु० ३
श्री वीर पुनित पादसे,
भूमि यह पावन भइ;
भावसे यह भूमि स्पर्शन,
किया जिनवर तानसे. आबु० ४
लब्धिसूरि तीर्थ स्वामी,

पार खेवाको करो;
 आत्मकज विकाश करीयो,
 मुक्तिके वरदान से आबु० ५

शिवगजमंडन

१५ श्री आदिजिन स्तवन.

(राग-पार्श्वजिणइ भजके परमपद पावना)

आदिजिणंद भजके, करमजड जारना.

(अंचली)

छोड माया प्रभु संयम पाया,

सहस वरस इसमें दिल ठाया;

यथाख्यात चारित्रे सुहाया,

ज्ञानदशा सजके—करमजड० १

केवलज्ञान को जिनजी पाया,

एक समय में सबही दिखाया;

नर सुरा सुरपति गुण गाथा,
 समवसरण रचके—करमजड० २
 देवाधिदेव मेरे नाथ सोहंदा,
 हरे भविकजन करमका कंदा;
 आपे जनको अभंद आनंदा,
 पार होना नमके—करमजड० ३
 माता मरुदेवा दर्शको आये,
 दर्शन से शिवपदवी पाये;
 सादी अनंती स्थिति ठाये,
 श्रीजिन गुण ग्रहके—करमजड० ४
 आत्मकमल में जो जिन ध्यावे,
 लब्धिसूरि निज कर्म खपावे;
 लाख चोरासी फेरा मिटावे,
 गुणी हो गुण रटके—करमजड० ५

१६ श्री सुपार्श्वजिन स्तवन-

(राग-जावो जावो ए मेरे साधू रहो गुरुके संग)

सेवो सेवो भविक तुमे सुपार्श्व जिन सुरंग,
(अंचली.)

जो दर्शन प्रभु आय के करते,

शान्त होते भवि लोक;

दर्शन करके पापको हरके,

हरे कर्म कुरंग.

सेवो० १

रहो निरंतर जिन को भजते,

हरो निचका संग;

आत्म ध्यानमें मगन मयेंगे,

करी कर्म से जंग.

सेवो० २

आत्म भावना स्थिर प्रभु करते,

करे विषयका भंग,

सप्तम जिनवर दिलसे सेवो,
 धरी हृदय उमंग. सेवो० ३
 प्रभु पीपासा शिवकी आशा,
 पुरत है मन चंग;
 प्रभु-पूजाको करो निरंतर,
 होवे नाश अनंग. सेवो० ४
 जुठी जगमाया प्रभु हरते,
 आपे सुख अभंग;
 आत्मकमलमां "लब्धि" दाता,
 सुधरत है सब ढंग. सेवो० ५

१७ मल्लिजिन स्तवन.

(राग-में तो सेवा करशांजी)

मैं तो हजुर रहेशांजी मल्लिजिन साहिबरी,
 मैं तो सेवा करशांजी. (अंचली.)

एकने छोडी बेने तोडी, त्रणनो करशुं त्याग;
 चारने छोडी पांचने मोडी, छशुं धरशुं राग.
 में तो० १

सात हरीने आठ वरीने, नवनो करीने नाश;
 दशने दिलनी अंशर राखी रहुं एकादश खास
 में तो० २

बार विचारी तेरने वारी, चौदनो करशुं छेह;
 भवभ्रमणा दुःख दूर करण कुं, धरुं पन्नरसु
 नेह. में तो० ३

सोलने बारी सत्तर टारी, हरी अठार हमेश,
 ओगणीशनो विचार करीने, टाळीश मारो
 कलेश. में तो० ४

वीश पिचागी एकवीश टारी, बावीशशुं धरी
 प्रेम,

तेवीश प्रभुजी शुभवल आपे, रहेवा कुशलक्षेम
में तो० ५

कर्ममल्ल श्री मल्लिस्वामी, आव्यो तुम दरवार,
कर्म लवाडी हरो अमारा, लुंटी रखो घरवार
में तो० ६

आत्मकमलमां ध्यान तमारुं, जाणी रक्षणकार,
लब्धिसूरि जिन प्रीते प्रणमे वसवा शिव
मोझार. में तो० ७

गोहीलीमंडन

१८ पार्श्वजिन स्तवन.

(एग-छोटा मोरी सैयारे जालीको मेरे गुंथना)

पार्श्वप्रभुजीरे, विनती मोरी मानना

(अंचली)

अति दुःख पाया मैंने, मोह के राज में (२)
लाख चोराशीरे, योनि में जहाँ घूमना.

पार्श्व० १

फँस रहा हु मैं तो, कमों के घेरमें (२)
चार गति केरे, दुःखों को बड़े झीलना.

पार्श्व० २

भटक रहा हु प्रभु, अधेरी रेन में (२)
ज्योति जगादो रे, टले ज्युं मेरा रुलना

पार्श्व० ३

सम्यग्दर्शन, ज्ञान के राज में (२)
चरण मीलादो रे, स्वामीजी नहीं भूलना

पार्श्व० ४

आत्मकमलमें जिन रहो दिलमें (२)
लब्धिप्रकारे, हटादो जग झुलना

पार्श्व० ५

(२८)

सिहोरीमंढन

१९ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-भारतका ढंका आलममें.)

शुद्ध दर्शन देकर शिवपुरका,
दिखलाया द्वार जिनेश्वरने;
एक पलमें पाप विनाश किया,
भवी जनका पार्श्व जिनेश्वरने. (अंचली)

जब काष्ठमें जलता नाग दिखा,
समजाया कमठ योगीश्वरको;
जलते को काष्ठसे बाहर किया,
सुनवाया मंत्र जिनेश्वरने.

१

सुन मंत्रको वो धरणेंद्र हुआ,
नवकारका महिमा खूब किया;

- दे दर्शन भवसे पार किया,
 भवीजनका पार्श्व जिनेश्वरने २
- दुनिया दोरंगी छोड़ दीनी,
 प्रभु पाये शुभ संजम धनको;
 तप करके घाती जलाय दिया,
 लिया केवलज्ञान जिनेश्वरने. ३
- प्रभु केवल पा उद्योत किया,
 जग जीयोका उद्धार किया,
 अघेर हरा तिरि सुरनरका,
 उपकारी पार्श्व जिनेश्वरने. ४
- शुभ आत्मकमल में ध्यान धरी,
 शैलेशीकरण विषे विचरी,
 जा मुक्ति शिव सपदको लिया,
 " सूरिलाटिघ " पार्श्व जिनेश्वरने ५
-

(३०)

राधनपुरमंडन

२० श्री शांतिजिन स्तवन.

(राग--मारुं बतन आ मारुं बतन)

- प्रभु नमन कर प्रभु नमन,
खरुं खरुं छे प्रभु नमन (अंचली)
राग द्वेषनी छाया नहीं ज्यां,
एवा प्रभुथी टले भवतुं भ्रमण प्रभु० १
क्रोध मान माया दूर काढो,
लोभ तणा प्रभु तोड़ो फंदन प्रभु० २
शांतिजिनेश्वर जग परमेश्वर,
भजन तमारु ताप हरे चंदन प्रभु० ३
पट खंड त्यागी संजम धार्यु,
अद्भुत त्यागी तने करुं वंदन प्रभु० ४
आत्मकमलमां "लब्धि" स्थापो,
तुंही शरण प्रभु तुंही शरण प्रभु० ५

૨૧ શ્રી પાર્શ્વનાથ-સ્તવન.

(રાગ-જનારા જાય છે તુ કા)

જનારુ જાય છે જીવન,

જરા જિનવરને જપતો જા

હૃદયમાં રાસી જિનવરને,

પુરાણાં પાપ ધોતો જા. જનારુ૦ ૧

વનેલો પાપથી ભારં,

વઢી પાપો કરે શીદને,

સઘગતી હોઢી દેયાની,

ઁરે જાલિમ ! તુઝાતો જા. જનારુ૦ ૨

દયાસાગર પ્રભુ પારમ,

ઉછાલે વ્રાનની છોઢો,

ઉતારી રામના રસ્તો,

ઁરે પામર ! તુ ન્હાતો જા જનારુ૦ ૩

જિગરમાં ડંચતાં દુઃખો,
 થયાં પાપે પીછાનીને,
 જિણંદવર ધ્યાનની મસ્તી,
 વડે એને ઉડાતો જા. જનારું ૦ ૪
 અરે ! આતમ બની શાળો,
 બતાવી શાળપણ ત્હારું,
 હઠાવી જૂઠી જગમાયા,
 ચેતનજ્યોતિ જગાતો જા. જનારું ૦ ૫
 સ્ત્રીલ્યાં જે ફૂલડાં આજે,
 જરૂર તે કાલે કરમાશે,
 અણંદ આત્મકમલ—લઢિધ,
 તળી લય દીલ લગાતો જા જનારું ૦ ૬

छाणीमंडन

२२ श्री शांतिजिन-स्तवन.

(राग-झट जावे चदन हार लावे)

भवि भावे देरासर आगे,
 जिणदवर जय बोलो,
 पछी पृजन करी शुभ भावे,
 हृदय पट खोलोने (अचली.)

साथी

शिखपुर जिनवी मागजो, मागी भवनो अंत,
 लास चोरामो वारवा, क्यारे थइशु अमे
 प्रभुसंत. भवि एम बोलोने भवि. १

साथी—

मोघी मानव जीदगी, मोघो प्रभुनो जाप,
 जपी चित्तवी दूर करो, तमे कोटी जनमना
 पाप. हृदयपट खोलोने. भवि. २

(३४)

साखी—

तुं छे मारो साहिबो, ने हुं छुं तारो दास,
दीनानाथ मुजपाकीने, प्रभु आपोने शिवपुर
वास. हृदयपट खोलोने. भवि. ३

साखी—

“छाणी” गामनो राजीयो, नामे शांतिजिणंद,
आत्मकमलमां ध्यावता शुद्धमले “लब्धि”
नो वृंद हृदयपट खोलोने भवि. ४

श्री सिद्धगिरिमंडन

२३ आदिजिन स्तवन

(राग-काळी कमलीवाले तुमपे लाखो सलाम)

सिद्धाचलना वासी जिनने क्रोडो प्रणाम.
(अंचली)

આદિ જિનવર મુસકર સ્વામી,
 તુમ દર્શનથી શિવપદ ધામી,
 થયા છે અસંખ્ય, જિનને ક્રોડો પ્રણામ.

સિદ્ધાં ૧

ત્રિમલગિરિનાં દર્શન કરતા,
 મનોમયના તમ-તિમિર હરતાં,
 આનંદ અપાર, જિનને ક્રોડો પ્રણામ

સિદ્ધાં ૨

હું પાપી હું નીચ ગતિગામી,
 કંચનગિરિનું શરણું પામી,
 તરશું જરૂર, જિનને ક્રોડો પ્રણામ

સિદ્ધાં ૩

અણધાર્યાં આ ગમયમા દર્શન,
 કરતાં હૃદય વધું અતિ પરમન,

जीवन उज्ज्वल, जिनने क्रोडो प्रणाम.

सिद्धा० ४

गोडी पार्थ जिनेश्वर केरी,

करण प्रतिष्ठा विनति घणेरी,

दर्शन पाम्यो मानी, जिनने क्रोडो प्रणाम.

सिद्धा० ५

संवत ओगणीश नेवुं वर्षे,

शुद पंचमी कर्या दर्शन हर्षे,

मल्यो ज्येष्ठ शुभ मास,

जिनने क्रोडो प्रणाम. सिद्धा० ६

आत्मकमलमां सिद्धगिरि ध्याने,

जीवन भळशे केवळज्ञाने,

“ लब्धिसूरि ” शिवधाम,

जिनने क्रोडो प्रणाम. सिद्धा० ७

२४ सामान्य जिम स्तवन.

(राग-क्या कारण है अत्र रोनेका)

तेरी सेवा हम करनेका,
आत्म में अत्र हुवा उजियाला,
पाया दर्शन श्री जिनवरका,
गया जंधेरा सभी जनमुका, तेरी० १

कर्म छाये प्रभु घनघोर,
चूरण दर्श समीर निकला,
छिनकमें ए उड जावे. तेरी सेवा० २

तु गुण घन मैं मोर,
पूरण धर्म विमिरनिकला,
व्याप रहा मेरे तनमनमें. तेरी० ३
आत्मकमल भयो अत्र भोर,

(३८)

देदो नाथ मुज लब्धि सकला,
तेरा शरण है सच्चा जगमें. तेरी० ४

वरकाणा मंडन

२५ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-सिद्धाचळना वासी जीनने क्रोडो प्रणाम)

वरकाणा श्री पार्श्व प्रभुका पाया शरण,
प्रभुका पाया शरण.

वामा देवीके नंद दुलारा,

अश्वसेनके सुत सुखकारा;

भविजनके आधार. प्रभुका पाया० १

पीतलको चामीकर मानी,

बुरे देवको दिलमें ठानी;

हुवा बहुत खुवार. प्रभुका पाया० २

- काल अनंत युं निष्कल खोया,
 ठोर ठोर दुःख बीजको रोया;
 मिला प्रभु हितकार, प्रभुका पाया० ३
- आनंद उर्मी तनमें सारे
 सुखसागर बहा चित्त हमारे;
 वाणी आनदकार, प्रभुका पाया० ४
- तेरी आशाबंध में आया, .
 हरो प्रभु झटपट भव माया;
 दियो शिववरनार, प्रभुका पाया० ५
- संपत उग्नीस राणु वर्षे,
 चैत्र शुदी पुनमेके दिवसे;
 पाया दर्शन सार, प्रभुका पाया० ६
- आत्मरुमल निर्मल कर नाथ,
 लब्धिसूरिको दीजिये माथ;
 कियो कपसें बहार, प्रभुका पाया० ७

सुमेर मंडन

२६ शांतिजिन स्तवन.

(राग-सोहीनी-ढुंढ फिदा जग सारा.)

शांति जिणंद सुखकारी सुखकारी,
प्रभुजी मानो वंदना. (अंचली.)
सुमेर मंडन पाप नीकंदन,
जगजन नंदन शीतल चंदन,
जगदावानलवारी नलवारी. प्रभुजी० १
अचीरादेवी नंद कहावो,
भाविक भवीको भवसे वचावो,
धन्य जीवन उपकारी उपकारी. प्रभुजी० २
गर्भमें आके मारी नीवारी,
अजब महिमा ए प्रभु तारी,
लियो पारेवो तें उगारी तें उगारी. प्रभुजी० ३

चक्रवर्तीकी रिद्वी पाये,
 उसमें भी नहीं नाथ लुभाये,
 लिया संजम हितकारी हितकारी. प्रभुजी० ४
 सही उपसर्ग प्रभु केवल पाये,
 चार निकायके देवता आये,
 धामधुम करी भारी करी भारी. प्रभुजी० ५
 समोपसरणमें देशना दिनी,
 भविजन की बहु वृत्ति भीनी,
 तार लिये नरनारी नरनारी प्रभुजी० ६
 संवत् ओगणीश बाणुं वर्षे,
 चैतर शुद्ध आठमके दिवसे,
 कर्मा दर्शन शिवकारी शिवकारी प्रभुजी० ७
 आत्मकमलमें जिनवर ध्यावु,
 लब्धिसूरी क्षण शिवपुर पावु,
 अविनश्वर गुणधारी गुणधारी. प्रभुजी० ८

२७ जावाल पार्श्वनाथ स्तवन.

(राग—गङ्गल)

प्रभु श्री पार्श्वकी सेवा,
करेंगे हम करेंगे हम,
भवोदधि दुःखका दरीया,
तरेंगे हम तरेंगे हम. (अंचली)
सुरत मुज प्राण प्यारेकी,
धरेंगे हम धरेंगे हम,
उन्ही के रंगसे जीया,
भरेंगे हम भरेंगे हम. प्रभु० १
तोडके मोहका बंधन,
उदासी होके विषयोसे,
सलुनी-श्याम-सुरतमें,
रमेंगे हम रमेंगे हम. प्रभु० २

सोने चांदीकी नहीं परवा,
 न परवा सुत दारासे,
 प्रभुके नामकी परवा,
 रखेंगे हम रखेंगे हम, प्रभु० ३

करम घट माळ बुरीफो,
 छोडकर अब लगे पीछे,
 तेरे एक नामकी माला,
 जपेंगे हम जपेंगे हम प्रभु० ४

खुदी हमसे हटे जिनवर,
 जपेंगे जापको तबतक,
 जुदाइ नाथकी हमरी,
 हरेंगे हम हरेंगे हम, प्रभु० ५

सरुधर देश जावाले
 प्रभुका दर्श है पाया;

“स्वरिलविध” पुरी मुक्ति,

वरेंगे हम वरेंगे हम.

प्रभु० ६

पालीताणा मंडन

२८ श्री गोडी पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-जवीन दुनिया वसावीशुं)

गोडीजीन दील वसावीशुं.

अंतरनुं दिल हसावीशुं;

करममां नही फसाइशुं गोडी० १

शीखवशुं शुद्ध संयमने,

ओलवशुं मोहनी जाळो;

भविक उद्धारना माटे,

करमने मूलथी बाळी;

आतम ज्योती जगावीशुं. गोडी० २

भजशुं नित्य जिनवरने,
 गुणोनी प्हेरशुं माळो;
 हृदय गोभाज्या माटे,
 जिणंदवर गुण संभाळो;
 गुणोमा दिल रमात्रीशु गोडी० ३
 सुधारी निज आत्मने,
 रीझणशु नाथने चारो;
 लेया सुख मुक्तिना माटे,
 “सूरि लब्धि” मिले प्यारो,
 पुरी मुक्तिमा टाडशु. गोडी० ४
 २९ सादडी चिंतामणि पार्श्वनाथ
 स्तवन.

(राग-घोळपोळ आदिश्रव्याषा णाडनारी मर जीरे)
 नित्य नगु चिंतामणी पारस, सेवा प्यागीरे,

के दिलमां धारीरे. (अंचली.)
 सादडी शहेरमां आप वीराजो,
 मंदीर मोटो भारीरे,
 देश देशके यात्रु आवे,
 आनंद कारीरे. दिलमां० १
 नगर बनारस जन्म लीयो प्रभु,
 वामादेवी मातारे.
 देव सकल मिल स्नात्र करायो,
 हर्ष अपारीरे. दिलमां २
 वरसीदान दइ संजम लीयो,
 घाती कर्म खपायोरे,
 वीतराग हो केवल पाम्या,
 गुण गण कारीरे. दिलमां० ३
 समोसरणमें आप वीराजो,
 नीरखत आनंद पायारे,

वाणी थारी सकल जनोंको,
 लागे प्यारीरे. दिलमा० ४
 आत्मकमलमां लिमने ध्याया,
 सो शिवपुरको पायारे,
 “लब्धिसुरि” पाम्या श्री जिनवर,
 मुक्ति प्यारीरे. दिलमा० ५

३० केसरीयाजीनुं स्तवन.

(राग-केसरीया थाणुं ग्रीते कशीरे साचा भावणुं.)

केसरीया दादा दामके दुःख निवारजो.
 (अंचली.)

इम अरमर्पिणी कालमें आदि,
 राजा प्रभु कहाया,

प्रथम भिक्षुक प्रथम मुनीश्वर,

नाभिवंश दीपायारे.

केस०

सर्व नीतिकी करी विदीति,

भवभीति हरनारा,

प्रभु चरणको प्रीते सेवे,

भवजलधि तरनारारे.

केस०

एक वरस तक अन्न अभावे,

समभावे दिल ठाया,

सहस्र सम अदभुत तप करके,

केवलज्ञानको पायारे.

केस०

भवीजन पीके आपकी प्रभुजी,

देशना अमृत मीठी,

संयमभाव करणसे फट गई,

जन्म मरणकी चीट्टीरे.

केस०

पुत्र नव्वाणुं प्रभुजी तारी,

कराठ शिपको स्वारी,
 अन्य भी लाएला जन उद्वरीये,
 हमारी अब है चारीरे. केस०

पूरय नव्याणु चार पधारि,
 मिद्धाचळ मरटार,
 हममे मिद्धगिरिका महीमा,
 हुया है अपरंपारिरे. केस०

अष्टापद पर मुक्ति पाये,
 इद्रे ओन्टय टाया,
 आत्मकमलमें जियने ध्याया,
 "लटिधसुगी" शिप पायारे, केस०

३१ पावापुरी महावीर विरह स्तवन

(राग-भैखरे उतारो राजा भरथरी)

यादी रहे प्रभु वीर तणी,
दिलमां दिवस ने रातजी,
दुःखदाइ पावापुरीनी,
नहीं भूले ए वातजी. यादी० १
जग उपकारी नाथनी,
विरह केम भूलायजी,
मात विना जेम बालुडो,
आम तेम अथडायजी. यादी० २
सुरज अस्त थये थके,
जेम कमल करमायजी,
संघ सकल तेम वीर विना,
अति मनमां मुझायजी. यादी० ३

चंद्र प्रियोगे तडफडे,
 जेम चक्रोग जिणदजी,
 तेम तुम विरहे हुं तडफट्ट,
 मोह तिमीर दिणंदजी. यादी० ४

चातक मेघ पिना प्रभु,
 नही शाति लगारजी,
 तुम दर्शन बिना आ मा,
 पाभे दुःख अपारजी. यादी० ५

निर्यामक भय सागेर,
 अटणीमां मारिवाहजी,
 महागेप जीव रक्षणो,
 गण धयो दिल दाइजी यादी० ६

श्रुत आधार जिनवर गये,
 हरे आगम आधारजी,

(५२)

दर्शन मूरतिमां मळे,

मानुं साक्षात्कारजी.

यादी० ७

आत्मकमलमां ध्यावतां,

नित्य वीर जीनेशजी,

“लब्धिसूरि” संपद मळे,

टळे संघळो कलेशजी.

यादी० ८

३२ दीवाळी महावीर निर्वाण

स्तवन

(राग-भेखरे उतारो राजा भरथरी)

वीर विरह अति कारमो,

संघर्षी केम सहायजी,

अपापा पापा थयुं,

दुःख ते न विसरायजी.

वीर०

जीरण लेख शाला विपे,
 कर्तुं अंतिम चोमामजी;
 मोल पहोर दीधी देशना,
 बुरो कृतो भर नामजी. वीर०

पंचावन प्रभु शुभ कर्ता,
 अशुभ छे पंचावनजी,
 अध्ययन जीव गुण कर्ता,
 अप्यु आतम धनजी. वीर०

सारतकन्द अमायास्या दिने,
 पाभ्या प्रभु निरवाणजी,
 नरवर दिप प्रगटावता,
 भयु पर्य महानजी. वीर०

“ देखगर्मा ” प्रतियोधना,
 मोरन्या रीतम म्यामजी,

वीर नीरवाण काने सांभळी,
 दिलडुं वन्युं दुःख धामजी वीर०
 वीर ! वीर ! इम विलपतां,
 पाम्या केवल ज्ञानजी,
 वीतराग विचारतां,
 धन्य धन्य ए ध्यानजी. वीर०
 आत्मकमलमां वीर प्रभु,
 धरतां ध्यान हंमेशजी,
 “ लब्धिसूरि ” शिव संपदा,
 मळे सुख अशेषजी. वीर०

३३ चंपापुरी वासुपूज्याजिन स्तवन
 (राग-अहो अहो पासजी मुज मळीयारे.)
 चंपापुरी तीर्थने भवी सेवारे,
 वीजो नही सुखदाइ मेवो. (अंचली)

विचरंता वासुपूज्य आव्यारे,
 भविजनना दिलमां भाव्यारे,
 साथे संघ चतुर्विध लाव्या. च. १
 प्रभु देशना दीधी रढीयाळीरे,
 नाठी भविजननी मती कालीरे,
 त्यांतो प्रगटी सुमती दीवाळी चं० २
 अति उपकारी जिनरायारे,
 ध्यान शैलेशी दिल ठायारे,
 प्रभु शिवरमणीने पाया. चं० ३
 समकित शुद्धिनुं कारण जाणारे,
 तिर्य मेयानु फल दिल आणारे,
 थाय सेवाधी त्रीभुवन राणो चं० ४
 आत्मकमलमा जिनगर ध्यानेरे,
 “ लब्धिसुरि ” पहोंचे शिव स्थानेरे,
 भवि होय ते साचु माने. च० ५

३४ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-रखीयां बंवावो भैया)

जीनजी को ध्यावो भैया गुणगण गावोरे
(अंचली)

सुरती प्रभु की आली सुरत नीराली
तारे तुमारी नैयां जयजगदीवो.. रे जिनजी
पुजन की थारी लगी है लयभारी
जगसां तुमारी जैयां जय जगदीवोरे जि०

दूरगति ने दारी आत्म गुणकारी
कर्मोनो थावो खईयां जय जगदीवोरे जि०
गुणोकी श्रेणी आली देती है दुःखटारी
सबो सदाए सइयां जय जगदीवोरे जि०

पार्श्व जिणंदासे प्रीत लगी है मोहे
लब्धिमूरि गुण गइयां जय जगदीवोरे जि०

३५ वीरजिन स्तवन.

वीर जीणंद मुजे दिलमें भाया
 काल अनादिका मोह भगाया
 समकित मेरे दिलमें प्रसाया,

आतम ध्याया ज्योति जगाया
 तुमही हो वीतराग बालम,
 तुमही हो वीतराग वीर०

काल अनादि मे भयमें फसाया,
 मुख नहीं पाया दुःखमें दटाया
 तुमही हो वीतराग बालम
 तुमही हो वीतराग वीर०

प्रभु चरणोंमें शिरकां झुकाया,
 दुःख दटाया मोह मीटाया

(५८)

तुमही हो वीतराग वालम,
तुमही हो वीतराग, वीर०
अब जिनवर मेरे दिलमें ठाया,
गुणगण गाया भवसे तराया,
तुमही हो वीतराग, वीर०
भूला न जावे गुणको भूलाया,
ज्ञान जगाया आनंद पाया,
लब्धिसूरि सुखकार वालम,
लब्धिसूरि सुखकार, वीर०

३६ ऋषभजिन स्तवन.

(राग-गझल)

ऋषभजिन सुनलियो भगवान,
अरज तुमसे गुजारुंहुं (अंचली)
लगाकर कर्मने धेरो,

योनि लख वेदवँसु फेरो,
जन्म मरणो की धारामें हा हा ।

कया कष्ट धारुहु कपम १

धामोधाम एकमें जीनजी,
सत्तर मरणो जनम लीया,

गति निगोद विकारोमें,
अनंता काल हारुं हु कपम २

नरक दुःख पेदना मारी,
निरलने की नहि चारी,

शरण व्हा है नहि किसीका,
प्रभु ए मच्च पुकारुहु कपम ३

गति तिर्यंच की पामी
जदा नहि दुःखकी खाभी

जगो दुःखसे चकर आवे,
 नहि आंखो से भालुं हूं कृपम ४
 मुझे ऐसा करो उपकृत्
 होउंमें जिससे निर्मल हूँ,
 अट्ठावीश लब्धिको पाई
 मोक्ष लक्ष्मी निहारुं कृपम. ५

३७ श्री अजितजिन स्तवन.

सुनो सुनो मेरी इतनी अरज,
 अजित ! कान धरी;
 भव दावा नल से बचालो
 अमृत वृष्टि करी सुनो० १
 पीछे है कर्म अरि,
 उस पापी को दूर करी;

करो कृतार्थ दास अपने,
 मोक्षकी महेर करी; सुनो० २
 आपकी आश खरी,
 मोहे ओर से कायपरी;
 समकित सार लही है जिनपर,
 नाम जपु तुमरी. सुनो० ३
 मुज आत्म कमलरी,
 स्वामी खूब विकासितकरी;
 सर्व लब्धि का नाथ बनादो,
 तनिक महेर करी सुनो० ४

३८ इन्दौर आदिजिणंद स्तवन

(राग—रव्याली)

इंदौर में विराजे, आदि जिणदराया,
 दर्शन जिणद करके, हर्षे हृदय भराया इ० १

बलिहारिजिनजी तोरी, विन हार तें निभाया,
 एक वर्षतक विरागी तपसे तपाइ काया. इं० २
 एक लाख पूर्ववर्षों, लगी लगन लगाया,
 संजममें पूर्ण भावे, घातिकर्म भगाया. इं० ३
 आतममें ज्योत प्रगटी, जिनकी सकल स्वरूपी,
 रूपी भाव जगके जाने, जाने सवी अरूपी इं० ४
 मालव भूमि मनोहर, इंदौर शहर शोभे,
 आदिजिणंदमंदिर, भविजनकेमनकोलोभे इं ५
 आतमकमलमें जिनजी, हाजर हजुर हमारे,
 शिवलाब्धि नहि है दूरे, चरणे वशे तुमारे इं ६

३९ इन्दौर अजित जिन स्तवन

(राग-हुंतो पूजुंगा पारसनाथ बतादे पहाडिया)

अजितजिणंद सुखधाम. जपीले सुखकारीया.
 जपीले सुखकारीया. अंचली

- मालव देशे दीपे मनोहर, दीपे मनोहर
 इंदौर मंदिर सार, जपीले सुखकारीया. १
- नगरी अयोध्यामें प्रभु जन्मे, में प्रभु जन्में,
 त्यागदिया ससार जपीले. २
- संजमधर प्रभुकेवल पाया, केवल पाया,
 उपदेश दिया मनोहर. जपीले ३
- क्षण भगुर ए मानव देहसे, मानव देहमे,
 करील्यो धर्म सुखकार जपीले ४
- मयम पाकर मुक्ति मिलावो, मुक्ति मिलावो,
 दहकर करम कुठार जपीले. ५
- प्रभु वचनोंको सुनकर संयमी, सुनकर संयमी,
 बहुत हुए नरनार. जपीले ६
- अति उपकारी जिनवर जेसो, जिनवर जेमो,
 और नहि अवतार. जपीले ७

आतमकमलमें धर शैलेशी, धर शैलेशी,
लब्धिसूरि हुए पार. जपीले. ८

४० नवपदजी का स्तवन.

(राग-दर्श ऋषभजिनकीजे भवियां)

सिद्धचक्र गुण मेहो भवियां
मेहोरे मेहोरे, धर्मदेहो. अंचली.
आतम सुखकी खेतीकारक,
ए उपकारक मेहोरे मेहोरे मेहो
धर्म देहो. सिद्ध. १

सर्व तत्वका सार है इस्मे,
देव गुरु, धर्म एहोरे एहोरे एहो
गुण मेहो. सिद्ध. २

(६५)

इस्के सेवनसे कोठी श्रीपाल का,
कंचनमय भया देहोरे देहोरे देहो.
गुण गेहो. सिद्ध ३

आत्म हितकर नवपद जगमे,
गुण अनंत धर लेहोरे लेहोरे लेहो
गुण गेहो सिद्ध ४

हुए अनते होंगे अनते,
सिद्धवर धर सिद्ध नेहोरे नेहोरे नेहो.
गुण गेहो सिद्ध ५

आत्म कमलमे नवपद ध्याने,
लब्धि सरि कर्म छेहोरे छेहोरे छेहो
गुण गेहो. ६

४१ श्री पार्श्वनाथ स्तवन.

(राग ओ मोटरवाळारे मोटर जरा रोकना)

ओ पार्श्वभटेवारे कर्मोंको जरारोकना अंचली
काम न बसमें क्रोध न बसमें,
ए तुं सब जानेरे.

अहो मेरो आतम जानेरे कर्मोंको जरारोकना
नब्ज न बस्में दिल नहीं बसमें
ए तुं सब जानेरे.

अहो मेरो आतम जानेरे कर्मों को जरा
रोकना. २

नरके रखडतां निगोद मे पडतां
प्रभुजी बचावोरे

सुखसंपद लावोरे कर्मोंको जरा रोकना. ३

तिर्यंच दुखिया, देव भी दुखिया

मानव दुःख दायोरे

न होय धर्म सहावोरे कर्मों को जरा
रोकना. ४

आत्म कमल में धर्म अमल में,

शुभ लब्धि जगावोरे

मुझे प्रभु शिवपुर ठावोरे

कर्मों को जरा रोकना ५

४२ चिंतामणी पार्श्वजिन स्तवन

(राग-मेरे मौला बुन्दादे मदीने मुझे.)

मुझे दर्शन पान पिलाया करो

मेरे आत्म गुणको खिलाया करो,

साखी—

प्रभु चिंतामणी पारस लगन तोरी जीगरसे है

करो भवपार मुझखेवा नहींमहोवत दिगरसे है
प्यारे फीदवी को मत बहलाया करो. १
वेअंत सिफत देखके चरणोंका है शरणा लिया
कर्मकी सितमगीरिको आज धक्का देदिया
मेरे अंडुनी नूरको जगाया करो. २
आत्म-कमल-लब्धि विकाशक
मिलगया जिनराज जब
पालीया अंतर खजाना नहीं रहे कंगाल अब
खाकसार करी खबरदार करो,

४३ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-गझल)

शरण ले पार्श्व चरणोका
फिर फिर नहि मीले मौका (अंचली)

देवनके देव ए सोहे इन्होंका देख जो मोहे
 हटे तस दुःख दुनिया का
 फिर फिर नहि मिले मौका शरण. १

इन्होंका नाम जो लेते उन्होंको शिवसुख देते
 मारग यह मोक्ष जानैका
 फिर फिर नहि मिले मौका. शरण. २

अनादि काल भव भटका
 जरी तु पार्श्व से छटका,
 मिला अत्र वक्त ध्याने का
 फिर फिर नहि मिले मौका शरण. ३

जिन्होंने सर्प को तारा
 नमस्कार मंत्र के द्वारा,
 वोही तुम तार लेनेका,
 फिर फिर नहि मिले मौका शरण ४

गुण है पार्श्वमें जैसे,
 नहि और देव में ऐसे
 यही भवपार लगानेका,
 फिर फिर नहि मिले मौका, शरण ५
 कहे लब्धि जिणंद सेवो
 ऐसा है अन्य नहि देवो,
 भवाब्धिपार करने का
 फिर फिर नहि मिले मौका शरण ६

४४ श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-थई प्रेमवश पातलिया)

श्रीपार्श्व जिन गुण दरिया
 मेरा दिल प्रभुजीने हरीयारे,
 (अंचली)

शुखेश्वर वर नाम धरायो

भव्य जीवन मनोहारी,

तुम चरणे मिर झुकाई

कैई जीव भवोदधि तरियारे,

श्री पार्श्व. १

पुरुषादानीय नाम कर्म मे

नाम अनेक तुम धारो

जपने मे होय सुधारो,

जापक शुभे गति अनुमरीयारे.

श्रीपार्श्व २

गत चोरींगीमें यह सुदर

बिंब प्रभुको निपायो

हम पुण्य उदय जब छायो

तब दर्शन जिनका करीयारे.

श्री पार्श्व. ३

लब्धि धारी मंगलकारी

मेरु उपमा धारो

लक्षण है पारा वारो,

प्रभु भुवन जयंत जय करीयारे

श्री पार्श्व. ४

आत्म कमल निर्लेपी कारक

भव हारक शिवकारो

किये अनंत पुण्य अब धारो

जिसे लब्धि पात्र जिनमलीयारे.

श्री पार्श्व ५

४५ श्री पंचासर पार्श्व जिन स्तवन.

(राग-जालीम सरकारके हम घाले पडे हैं)

पंचासर पास तोरे शरणे खडे हैं

कर्मो ने पास में फसाये पडे हैं अंचली.

शरणा लीया तेरा प्रभु,

वो कर्मसे नहि हारता

आत्म की मस्ती में बड़े चढ़े है

पचासर० १

त्याग धर्म तें कहा है,

मुख जो नहि मानते

सड़े में दुर्गत के वो जापड़े हैं.

पचासर० २

त्याग दो जिनपर हमें,

राग नहि मनमें रहे

ढोंगीसे नहि हटने वाले अड़े हैं.

पंचामर० ३

तेरे धरमकी चामना,

रोम-दुःख रमती रहे

दुर्जन भले पीछे सामे रखे हैं. पंचामर० ४

तेरा प्रभु है राज जहां पर,
 काज वहां नहि मोहका
 मोहीतो तेरेसे न्यारे पडे हैं. पंचासर० ५
 जैन कहलाते बहुत,
 अजैन हैं कलिकालमें
 संयम के कामोंसे नाहक रडे हैं.
 पंचासर० ६

संयमी वैरी बनी,
 अयोग्यता आगे धरे
 विरती के वैरी वे खुल्ले पडे हैं.
 पंचासर० ७

दर्शन करे है दोडकर,
 तेरे प्रभुजो रोजही
 तेरे धरम के मरमसे लडे हैं.
 पंचासर० ८

(७५)

आत्म कमल को खोल कर,
दाजिये प्रभु सन्मति
लब्धिकी लहेरोमे मिले पडे है.

पंचासर० ९

जोगीवाडा मंढण

४६ श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन

(राग सावरीया से हमसे ए ना बनी)

सावरा पारस तोरे चरणे रलीरे अचली
प्रकाशो ज्ञान बत्तीया मिले शिव सुदरी.
प्रेमसे निभावो बनी प्रीत भलीरे.

सांवरा० १

हटादो मोह रतियां जाय ममता मरी,
भावना जगावो जाउं तुमसे हलीरे

सावरा० २

कटे है कर्म कतियां हटे ए चुरा अरि
आत्म कज खोलो रहूं लब्धि मलीरे
सांवरा० ३

४७ महावीर स्वामी स्तवन.

पूजो वीर प्रभु सुखकार
पाप दल पटक पटक पटक
पूजा कहेगी भवपार,
न रहे खटक खटक अंचली.
अर्जुन माली से पापी नर
तोडी कर्म कटक
वीर प्रभु पूजा फल देखो,
पहोंचे शिवपुर झटक. पूजो० १
चंदन बालासे लेई उडादिये,
दिया केवल फटक

रणे शूर दाने जो वीर है,
 न रहे देतां अटक पूजो० २
 आसमांही सोवार सिमरलो
 बन जाओ वीर रटक
 वीर रूप तुम ही हो जावो,
 हटजावे भवनटक पूजो० ३
 काल अनंत से समय मिला है,
 तुजको भयन भटक
 पाप तत्न परिहारी प्राणी
 भयन सोजा छटक पूजो० ४
 वीर प्रभु से तान लगाई
 आत्म कर ज्यु स्फटक
 कमलवत् निर्लेप गनी फिर
 ले "लब्धि" शिव चटक पूजो० ५

४८ श्री सामान्यजिन स्तवन.

(राग-देश उड़ी हवामें जाती है)

रुची प्रभुमें होती है, होती रुची ए स्वाम
आवो प्रभुजी दिल मे मेरे
नाशे करम मग आठ रुची
प्रभुकी संगत रंगत लावे,
शिवपुर से मिलती मतियां
आत्मकमल में लब्धि लावे.
चाहुं श्री जिनराज रुची. रुची.

४९ श्री शीतलनाथ स्तवन.

(राग-स्राजन सुन सुपनेकी बात)

श्री शीतल झालो हम हाथ
जिनजी हो शीतल०

जिम जिम तुम हम नाम दिलोमें
 लावे जिन आनंद वरसाद जिनजी
 मेरे स्वामी, रसीली तोरी पामी,
 मूरती गुण धामी.
 आजतो नाथ भाग्ये मिली जिनजी
 दिल मिलाकर, ज्ञान दिलाकर,
 देदो धर्मकी रीत.
 आजु बाजु पर सुपार्श्व सोहे,
 वासुपुज्य जिणंद
 केसर पुष्प से कीजे अर्चन,
 करीए भजन सुखकार
 भविया पल पल जपो जिनराय, जिनजी
 साखी.
 आत्म कमल लब्धि मिले,
 जिन जिन जाय सुरग

श्री जिन भक्ति मन भली,
करे अनंगनो भंग,
भवियां पावे शिवपुर सात जिनजी.

५० इडरगढ श्रीशान्तिनाथ स्तवन

(राग-छोटेसे बलमे भोरे)

शान्तिं जिणंदजी के ध्यानमें,
ए मस्तक डोले,
ध्यानमें ए मस्तक डोले,
ध्यानमें ए मस्तक डोले. शान्ति०
इडरगढ पर हर्ष से मुज मनडां जीले २
दर्शन करनसे भवि भावसे,
युं जैजै बोले शान्ति०

भक्ति में धून लगावो,
 नहि मिले ए देव अमोले २
 जगमे कोई सुख नाहि,
 जिन प्रभुके दर्शन तोले शान्ति०
 आत्म रुमल भवि दर्शसे,
 निज दिलडा खोले २
 धारु हु नाथ जिसे प्रेम,
 सूरि लब्धि बोलै शान्ति०

५१ श्रीमहावीर जन्म पालणा गीत.
 (गान-त्रिताळ जय जयवती)

पालणे झुलत प्रभु वीर जिणदा,
 झुलना झुलावे श्री त्रिशला मेया.
 पालणे० १

रत्नकनक मय पालणुं सोहे,

मंगल गावे सव देव देवैया.

पालणे० २

मोर मेना ओर पुतली जडिंदा,

गीत गावत तिहां किन्नर गवैया.

पालणे० ३

त्रण ज्ञानके धारी जिनवर,

जग मायामें नांही नचैयां.

पालणे० ४

भर यौवन में संजम पाये,

रमा रमणीका स्नेह हरैया.

पालणे० ५

आत्म कमलमें लब्धि ध्यावे,

धन्यहो ! जिनवर शिव वसैया.

पालणे० ६

५२ श्री सीमंधर जिन स्तवन.

(जाके मथुरा हा कानाने)

विदेह क्षेत्रे जाऊर चेतन, सीमंधर भेवो
मपिक तुमे सीमंधर सेवो.

ए जिनवर मुज दिलमें भावे, एदेवाधि देवो
राग द्वेष अरु मोह मीटावे,
पारऊरे भव रेवो ॥ १ ॥

दुःख हर सुख कर जिनवर सेवा
जेवो न मीठो मेवो
ते लेवा मन, तलसरह्युछे
समय मळो मुज एवो ॥ २ ॥

चरण करण मन धरण हेवा
लेवा लेवा जिनवर सेवो,

(८४)

दिनमणी गुण खाणी जिनवर भजकर
नर भव लाहो लेवो ॥ ३ ॥

नृपति नरपति सुरपति सेवे,
हू निरभागी केवो आलसुपण नहीं दर्शन पासुं
ईच्छुं जीम गजरेवो ॥ ४ ॥

आत्म-कमल मां तय जप संजम
सांगु तारा जेवो
लब्धि सूरि निजदास बनावी
प्रगटावो एहेवो ॥ ५ ॥

५३ श्रीजिन स्तवन.

(राग-एक वगला वने न्यारा)

एक ध्यान प्रभु तारा,
वने मनवा जीससे सारा (अंचली)

होनेको रंगला, कर्मोंका भगला,
 शुद्ध धर्मोंके द्वारा, शिवमंदिर प्यारा
 इतना उंचा रंगला होये, मानु आत्म प्यारा,
 ध्यानको धरके, ज्ञान वाहनपर,
 फूले फले चीत हमारा एक. २
 मडाण हो गुणोंका, आत्ममें प्यारा,
 ध्यान दिलको भरके जीनको,
 लब्धिमें सुख पाई एक ३

५४ श्रीजिन स्तवन.

(राग-हेछो लेछो लेलो कोई गजग लेछो)

गालो गालो गालो . गुणी गुणको गालो,
 श्री जिनर की व्हेर मीलाई. गा०
 पाई आनद केरी छाया, गालो

लाई रंगका रंला, बनो प्रभुका चेला,
 ये दुनिया दिवानी जाणी जगको फानी
 श्री प्रभुमें दिल डाली,
 चित भावों की लाली. गालो.
 ज्ञान गुणाली ध्यान गुणाली,
 कर्म हठ है मुज छेके. गालो.
 ये ताजा ध्यान जिनेश्वरका,
 ये शरणा लेना श्री जिनका. गालो.
 जो सुज गइ हो अन्तरकी,
 तो पावे आत्म कमल लब्धि. गालो.

५५ सामान्याजिन स्तवन.

(राग-नदी किनारे बैठके आओ)

ज्ञान वाहन पर चढ़कर आओ,
 अध्यात्म दिल लाओ.

जिनका पल पल ध्यान धरीने,
निज करम को कटावो, ज्ञान. १

तुम बनजावो आत्म राजा,
सुमति बलुं में रानी,
एक मेरु हो चेतन हम तुम,
शिवपुर मार्ग सोहावो ज्ञान. २

केवलज्ञान का भाव जगा कर,
भव वनको ही दहावो.
आत्म-कमलको सुख सीलाकर,
लब्धि सूरि सुख पावो ज्ञान० ३

५६ श्री चंद्रानन जिन स्तवन.

(राग-पुजारी मेरे मंदिरमें आवो)

प्रभुजी मन मंदिर में आवो,
ज्ञाननकी सरितामें आकर दिलको
बहावो प्रभुजी०

तेरे आगे मैं करूं प्रार्थना,
 भवदुखको दहलावो,
 कर्मको वारो भविजन के तुम
 शिवके सुख दिलावो प्रभुजी० १

दिल हम ऊठरह्यो क्यों प्रभुजी,
 ये वातन समझावो,
 ज्युं सन ठाम ए आवे जिनजी,
 ए मुज मार्ग बतावो प्रभुजी० २

श्रीचंद्रानन चंद्र ज्युं शीतल,
 शीतलता, उपजावो,
 आत्म-कमलमें दर्शन प्याली,
 लब्धिसूरी को पीलावो
 प्रभुजी० ३

५७ श्री महावीर स्वामी स्तवन.

(रंग रात आई है नचा रंग जमाने के लिये)

यहा आने है प्रभु धर्म बताने के लिये,
आन देते है प्रभु मोह हटाने के लिये

अचरी,

दिल राजी हुआ है, प्रभुजी की सुन के दुआ,
अमीयामें विचरे, आति जमाने के लिये ॥१॥

कभी अचर है गुन, क्यों है दिल को जोहर
मुभी क्या है हीनेगी, माया भिटाने के लिये ३

जहा नाने है प्रभु, लोक में फरमाने है ॥

प्रभु महाराज आये, रंग उटाने के लिये ४

गिड़गध के दुआग, भरिगे ए भाना है ॥

रंगे भी जग प्रनरी, मुक्ति मिलाने के लिये ५

आत्म-कमलमें स्वामी, तुमही विराज रहो ॥
लब्धिसुरी की भव, भीती उडाने के लिये६

कपड वंज मंडन

५८ शांति जिन स्तवन.

(राग-शिर जावे तो जावे पण आजादी घरआवे)

शांतिजिगंद जे ध्यावे, ते दुःख कदी नहि पावे

तरवा भवथो शांति प्रभुना,

गुण निरंतर गावे ते दुःख. १

शांति शांति जपी निरंतर,

घटमां अलख जगावे. ते दुःख. २

जे जिन वरने जपे अहर्निश,

ते दुरगति नहि जावे ते. दुःख ३

स्याद्वाद रूप अमृत सरीखो,

जे उपदेश सुणावे. ते दुःख. ४

જિનગર જપતાં કર્મને ચપતાં,
 સીધો શિવપુર જાવે. તે દુઃખ ૫
 લઘિ જિનગર ધ્યાન ધરીને,
 આત્મ કમલ વિકસાવે તે દુઃખ. ૬

૫૯ શ્રી નેમિ જિન સ્તવન.

(રાગ પીટો પીટો .)

પીટો પીટો જીવરાને નેમિ નામ,
 મુઘા ધામ આપે દિલને આરામ,
 જીરનમાં મીઠી મમુરા,
 અમરના વર્ગની મૂરા,
 ધરનાર ધર છે નામ,
 મુઘા ધામ આપે દિલને આરામ. પી. ૧
 દેવતા વળ દેવતાહા જીન્દગાની ના,
 છે સુખીવાળ મર્યા, આ લોક ગાલામા

प्याला ए ज्ञाने छला छल प्रेमथी पीधाकरो,
 पाया करा ए अन्यने नीच कर्मने दूरेहरो
 ए प्रभुजीनो पैगाम सुधा धाम,

आपे दिलने आराम. पीलो० २
 आत्म कमल खीली रह्युं

एमा जीवन झुल्या करे,
 लब्धि केहे ए सत्य मानो,

शाश्वतुं जीवन धरे,
 रे जपो पले पले नाम सुधा धाम,
 आपे दिलने आराम. पीलो. ३

६० श्री महावीर स्तवन

(राम-मेरी माताके शिरपर ताज रहो)

मेरे दिलमे श्रीवीर विराज रहो
 ऐ सिर के सदा शिरताज रहो अंचली.

शुद्ध देवगुरु की टेक रहो,
 जिन धर्म का रीत गिवाज रहो,
 मुखसे जिन ऐ उच्चार रहो,
 ओर घग्गे दया का प्रचार रहो. मेरे. २

जिन राज मेरे रहीम गार रहो,
 भाई भाई का दिलसे मिलान रहो,
 नहि कोई किसीसे निगोव रहो,
 प्रभु नाम हाजर हजुर रखो. मेरे २

तु ब्रह्मा विष्णु महेश रहो,
 ओर दुनिया भेदका छेद लहो,
 नही जगमें कुछ ही कलेश रहो,
 सब लोकमें संपत सरित बहो मेरे. ३

प्रभु गुणमे दिल मुस्तार रहो,
 ए सबका भला कर पार रहो,

मेरे आत्म कमल में नाथ रहो,
सूरि लब्धि सदा जयकार रहो मेरे. ४

६१ सुविधिनाथ जिन स्तवन.

(नेम प्रभुना चरण कमलनी लगनी अमने लारी)

सुविधिनाथके चरण कमल की,

सेवा करे बडभागी,

भर यौवन में दीक्षा लीधी,

माया ममता त्यागी,

मोह प्रकृति सबही जारी,

दुःख हरनारी सुख करनारी,

क्षपक श्रेणी अन्तर धारी,

बनी आत्म गुण रागी. सुविधि. १

ज्ञानावरणी दर्शनावरणी,

त्याग दीनी अंतरायकी करणी,

ज्ञान दशासे ए करी वरणी,
केवल ज्योति जागी. सुविधि २
देशना द्वारा अमृत धारा,
वर्षा कर नरनारी वारा,

पुण्य धर्मका भर लिया क्याग,
पाप दशा गई भागी. सुविधि. ३

आत्म कमल को निर्मल करके,
कर्म अघाती को भी हरके,
दृष्ट सुखी शिव रमणी वरके,
लब्धि हरि लय लागी सुविधि ४

अनुसर महत

दर प्रज्ञानभ जिन स्तवन.

(सा गाढे धम्करे मयी तुझ पति)

पद्म प्रभुजी प्याग दिलमें मदा तुमे धारा
होगे रही अंतर मल गाग,

साखी

भटक भटक भववन विषे पाया भय अपार
पुण्य वशे निर्भय करूं लिया जिणंद आधार
कर निर्भय लीया शरणा थारा २
तुम विन और न तारक मारा २

कृपानाथ, मम प्राणनाथ

प्रभु तुंही तुंही प्यारा. हरो. (१)

साखी

रटे वेदांतिक ब्रह्मको स्मरे रामानुजराम
कृष्ण कृष्ण कोई कहे सारे तुमसे काम.
एक आशी को न करिए नकारा २
करे नकारा पडे दुःख भारा २
जगत् नाथ ! मे हुं अनाथ

मम खरा शरण थारा हरो. २

१ करनारा, २ तारा

(९७)

साखी

आत्म कमलमें जिन तुम रटी रहा दिन रात
मुज घट अतर लब्धि को करो विभु विख्यात
तारक विरुद तुम प्रभु धारा २
कायम रहेगा नहि वीनतारा २
कृपानाथ मम ग्रही हाथ
करो शिव रमणीहारा. हरो. ३

६३ श्री चंद्रप्रभ स्तवन.

(राग ब्रह्मवाली)

चदा प्रभुजी प्यारा मुज को दीयो सहारा.
तुम कर्म काष्ट वारा उसने हमे हँ मारा.
चदा० १
मे प्राही प्राही करता चरणों तेरे पडता.

क्यों नहि दुःखोंको हरता महा मोह सेहुं मरता
चंदा० २

करुणा समुद्र तु है नहि तुजसे कोई आला.
मुज मन बना है पक्षी तुम गुण गणों में माला.
चंदा० ३

नरकादिको में रुला तुम नाम कोजो भूला.
उसके बीना सहारे पाया है दुःख अमूला.
चंदा० ४

अब पुण्य वायु बाया, करमै विवर दिखाया
सम्यक्त्व चित्त धारा तब पाया है तुम
देदारा चंदा० ५

आत्म कमल दिनेश्वर दुर्लभ प्रभु जिनेश्वर
निज शक्ति संपदा दो शिशु लब्धिको
बचालो चंदा० ६

६४ श्री संभवनाथ स्तवन.

(भैरवी धावी मूर्ति मोहनगारी ए राग)

महा मूर्ति मंगल कारी,
 गुण गार संभ्र तारी अंचली
 धामको हारी धामको धारी,
 अचरीज कारी कीर्ति तारी,
 ज्ञान ध्यान भडारी महामूर्ति १
 रागको टारी द्वेष को चारी,
 १ कर्म रिपु दल जडसे पिडारी,
 हो गये शिष्यपद धारी महामूर्ति. २
 कर्म कटारी लगी मोहे भारी,
 र्छींच कर मुज निर्भय कर दीजो,
 निर्भय पद दातारी महामूर्ति ३

१ कर्म रूपी शत्रु

अति तमकारी मोह निशि भारी,
 महेर करी उसको दूर कीजो,
 महा तेज मनोहारी. महामूर्ति. ४
 आतमतारी कमल ज्यु न्यारी,
 एसी मुजे वनादो होऊं,
 शिव लब्धि भर धारी. महामूर्ति ५

६५ अभिनंदन जिनपद.

(राग-ठुमरी)

ध्यान धरले हो प्यारे मोहनीया
 अभिनंदन सुखकारारे,
 प्रभु गुणका कोउ पार न पावे,
 इंद्र मुनींद्र पण हारा के,
 किस तरह गुण गावुं मेरे जिनका,
 न करे काम मन मारारे ध्यान० १

गुण गाने को गुणी मन मोरा,
 तलस रहा अति भारारे,
 बाल मागर का माप करे ज्युं,
 कलम त्युं करमें धारारे ध्यान० २

लाख चोरागी योनि जिनपर,
 भटक भटक दुःख धारारे
 आनंद मे अब शरण लई प्रभु,
 दुःख का हुआ निगारारे. ध्यान० ३

मुज मन कमल में तुज को धारा,
 तु मुज हृदय का द्वारारे
 निग्र दिन घट में मनाउं तोरा मृजरा,
 श्रियपद लब्धि आधारारे. ध्यान० ४

(१०२)

वढवाण केम्प

६६ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन०

(राग-पंजाबी ठेका)

आनंद देती प्रभुजीकी मूर्ति अजोड,
दर्शन करीए मीटे सब कर्मोंकी खोड आ०
अंचली०

सब देवन में देव निराला,
पट् जीवनके हूए प्रतिपाला
महा मिथ्यात्वका बंधन तोड आनंद. १
राग द्वेष को जडसे जलाया,
ज्ञानामृतका प्याला पीलाया,
राज पाट दीया छीनकमें छोड आनंद. २
साधु सेवा मैत्री भाव सीखाया,

(१०३)

ममता त्यागी धर्म दीयाया,
एसे प्रभुजी मेरे शिरका मोड़ आनंद. ३
धन्य जनम प्रभु दर्शन पावे,
नित्य उन्नत गुण ठाणे ठावे,
मिला मानु उसे लाख करोड़ आनंद. ४
काल अनंत से जगमें रुलाई,
तत्त्व ज्ञान सह दर्शन पाई,
मनया चाहे मिलु जिनजीको दोड़ आनंद ५
वासुपूज्य जिन सुख कर स्वामी,
चढ़वाण कैम्पमा दर्शन पामी,
मिलगया मानु मुझे शिवपुर रोड़ आनंद ६
आत्म कमल जिन लब्धि दाता,
तार तार मुज भय दुःख त्रांता,
भय भ्रमणाका पोगलफोड़ आनंद. ७

१ मुकुट २ रस्ता, ३ रक्षक

६७ श्री शांतिनाथ स्तवन.

(राग- सरफरोशी की तमन्ना)

पूजलो श्री शांति स्वामी,
 शांति के आगार है,
 छत्र निराली सब से आली,
 धर्म के दातार है. पूजलो० १
 इल्म है लाइन्तहा और त्याग बेशुमार है,
 बहार है वे अंत जिसमें,
 ताकत का नहि पार है. पूजलो० २
 नही राग है नही द्वेष जिसमें,
 सबैर वे सिमाल है,
 इससे नही देव आलाँ,
 ऐसा मेरा ख्याल है पूजलो० ३

२ अनंतज्ञान ३ अनुपम संतोष ४ उत्तम

(१०५)

सिफत का नहि व्यान होता,
आप की अय शिरताज,
कौवीले देदार सुरत,
देखकर करता हु नाज पूजलो० ४
आत्म लब्धि वश कीनी है,
न इनसे कोई देदार है,
जिसने इनके चरण सेये,
उसका घेडा पार है. पूजलो० ५

६८ सामान्य जिन पद.

(गगनोरे मौला बुलाछो मदीने मुझे)

मेरा जीव कर्मोभे प्रभु हार गया
मेरा मन है माया में मस्तान भया

५ शक्तिका ६ दर्शनाय मूर्ति ७ आनंद

शेर

हिंसा कीनी में झूठ बोला चोरीयो कीनीविहु
 लालच सरितामें डूबाहूं जिनचरण शरणाग्रहूं
 मेरा जीवन करीयो जिणंद नया, मेरा १
 दान नहीं है शील नहीं है तपभी कीया नाहि
 भावना का लेश नाही तुं सवी जाणे सही
 तेरे आगे मुजे बहुत आती हया, मेरा २
 नीचसे भी नीच कामो कररहा में नित्य हुं
 तेरा बनी जिणंदजी में बहोत गुनेगार हुं
 मोहे शुद्ध करो मोपे लाइ दया मेरा, ३
 लाख चोराशी फीरे फिरभी बडा मुश्कील है
 एसाजनम मानवभया फिरक्योंभया गाफिलहै
 मेनें चुंही ये रतन गुमाय दीया, मेरा, ४
 नाम तेरा काम आता और माया जाल है
 उस के सहारे पालीया शिवपुर सो निहाल है

तेरा नाम रटन दिन रात कीया मेरा. ५
 आत्मकमल लब्धिमिले जिनराजहृदयआणीये
 जिनरागमेजीवनकटे सोजीवनमृतमरणणीये
 मेरे जीगरमें जीनजीने स्थान लीया मेरा. ६

६९ प्रभु प्रार्थना स्तवन.

(राग-कटवाली)

लगी है चाह दर्शनकी,
 मिटादोगे तो क्या होगा ! अचली.
 अनन्ते ज्ञान दर्शनकी जहां दस्ती रही जाती
 एसा गर मुक्ति के सुखको
 दिखा दोगे तो क्या होगा. लगी २
 अनन्ते जन्ममरणों में गटाए करुनी फिरती
 अनन्ते पराक्रमी मगरान
 निकासोगे तो क्या होगा. ! लगी. ३

इसी संसार सागर में मेरी नैया डूबी जाती

मल्लाह बनकर मुझे स्वामिन् ?

उगारोगे तो क्या होगा ! लगी. ३

राग और द्वेष प्रभु ! इनको

उडा दोगे तो क्या होगा. लगी. ४

मेरेमें ज्ञान दर्शनकी महा "लब्धि" कही जाती

पडा है कर्म का पडदा

उडादोगे तो क्या होगा ? लगी. ५

७० पार्श्वजिन स्तवन.

(राग भारतका डंका आत्ममें)

शुद्ध दर्शन देकर शिवपुरा,

दिखलाया द्वार जिनेश्वरने

एक पलमें पाप विनाश किया

भवी जनका पार्थ जिनेश्वरने. अंचली

जय काष्ठमें जलता नाग दीखा

समजाया कमठ योगीश्वरको

जलते को काष्ठसे बहार किया

सुनवाया मंत्र जिनेश्वरने

१

सुन मंत्र को वो धरणेंद्र हुआ

नवकारका महिमा सुब किया

दे दर्शन भवसे पार किया

भवी जनको पार्थ जिनेश्वरने.

२

दुनिया दोरगी छोड दीनी

प्रभु पाये शुभ सजम धनको

तप करके घाती जलाय दीया

लिया केवलज्ञान जिनेश्वरने.

३

प्रभु केवल पा उद्योत किया,
 जग जीवोका उद्धार किया
 अंधेर हरा तिरि सुर नरका
 उपकागी पार्श्व जिनेश्वरने ४
 शुभ आत्मकमल में ध्यान धरी
 शैलेशी करण विपे विचरी
 जा मुक्ति शिव संपद को लिया
 “सूरी लब्धि” पार्श्वजिनेश्वरने ५

७१ श्री महावीर जिन स्तवन.

(राग-मथुरामें सही गोकुलमें सही)

मुज मनमे तुंही मुज तनमें तुंही
 में सदा रहूं जिन तुंही ने तुंही
 अबही नहीं तो कबही सही
 प्रभुदर्श दिखावो कहींने कहीं (अंचली)

लाखों को तारे थे जिनपर
 अब हमको भी तारो दिलपर
 हम प्यासे हैं प्रभु शिव सुखके
 हम चरण दीखादो कहीं न कहीं मुज ?

तुम नाम रटन दिन रात करू
 तुम ध्यानमें मस्त सदा ही फीरूं
 उम्मेद है हमको तारोगे
 प्रभु कर्म हरोगे कहीं ने कहीं मुज. २

आत्म कमलमें प्रभु सीमरणसे
 स्तूरि लब्धि का होय प्रिकाम सदा
 हम कर्मोंका मन चुरा करो
 प्रभु दर्श दीखाने कहीं ने कहीं मुज. ३

नाडलाई गढ़.

७२ नेमिजीन स्तवन.

(राग-जैनधर्मका बुलंद सितार झंडा उंचा)

नेम नाथ प्रभु सुखकर प्यारा

भवसे तारण करो हमारा

नाडलाई पर्वत पर राजे

भवि जनोके हृदयमें छाजे

प्राण जीवन प्रभु तुं है मारा

भवसे तारण करो हमारा.

१

ब्रह्मचारी प्रभु जग विख्याता

तुं ब्रह्मा विष्णु शिवत्राता

अष्टा दश दूषण में वारा

भवसे तारण करो हमारा.

२

पशुओंका त्वर रक्षण कीना
 लग्न भावमें दील नहीं दीना
 राजीमतिसे किया किनारा
 भयमे तारण करो हमारा. ३

संजम धर घर घर पर फिरके
 दोष रहित प्रभु गोचरी करके
 जडसे घाति कर्म पिडारा
 भयसे तारण करो हमारा ४

केवल धर हरके जग ददा
 ज्ञान प्रचारका लेलिया धधा
 आप तरे प्रभु अन्यको तारा
 भयसे तारण करो हमारा. ५

आत्म कमलमें तेरा वामा
 होनगे प्रभु आनद खासा

लब्धिस्तूरी में रंग हे तारा

भवसे तारण करो हमारा.

६

७३ महावीर स्वामी स्तवन.

(राग-में बनकी चिडीयाँ बन बन बोलुंरे)

में प्रभु भक्तिमें चित्तको लगाकर डोलुंरे
में दास चरणका बनके दिलको खोलुंरे
में वीर वीर गुण गावुं नहिं कर्म फंद वसआवुं
प्रभु चित्त चित्तमें मित्त मित्त विनपाये

कबहुं न छोडु लगाकर डोलुंरे. १
में नाथके ध्यानको धरके जिन जिन बोलुंरे
में सुंदर भावको भजके अंतर खोलुंरे
में आत्म कमलमां ध्यावुं
शुभ लब्धि निज धट पावुं.

तुम बहाल बहाल धरु खयाल खयाल
 बिन पाये करहुं न छोड़ुं
 लगाकर डोलुंरे २

७४ इडरगढ शांतिजिन स्तवन.

(राग-प्रेमकी कहानी सखी सुनत सुहावे)

शांति जिणंद मुजचित्त सोहावे
 प्रभु दीलावे ज्ञान खजाना
 जन्म मरणकी रीतीया छुटाई. शांति० १
 प्रभु हटावे मोहका भाला
 लाख चोरासीकी पीर हटाई. शांति० २
 धर्म भाव की रीत निराली
 जो दील लावे अमर हो जावे. शांति० ३
 आत्म रमल में ध्यान लगाई
 जो गुण गावे मरण नहीं शांति० ४

लब्धि सूरि निज ज्योति लगाई
भव दुःख हरके शिवपुर जावे. शांति० ५

७५ पार्श्वजिन स्तवन.

(राग-बावा मनकी आंखो खोल)

दादा हरदे मेरी पोल दादा हरदे मेरी पोल
अंचली०

मेरेमें हो तुम गुण वासा,
तेरी एक घर बैठे आसा

ज्ञान शलाका लेकर नेत्र,
खोल सके तो खोल. दादा०

ज्ञान गुण है प्रभु में भारी,
क्षायिक दर्शन चरण के धारी

तन मन काया स्थिर बनाकर,
मुक्ति लीना अणमोल. दादा०

सब देवन में नाथ तुम्हारी,
 मूर्ति लागे मृज को ध्यारी
 आत्म कमल में ध्यान लगाकर,
 लब्धिसूरि रंग रोल दादा०

७६ जीनवाणी स्तवन.

रटो रटो जिनकी वाणी,
 भय से पार लहो प्राणी. रटो०
 प्रभु में दिल को जो धरते,
 नहीं रहते कर्म के दरदी
 हरो भय मय की शरदी तजो
 मोह के हैं दुःख दानो. रटो०
 आत्म कमल में गुण का भरना,
 लब्धि मूर्ति शिरपुर सचरना
 कर्म जोर को करदो फानी,
 तजो मोह को जो दुःखदानी. रटो.

७७ वीरमगाम आंति स्तवन.

(राग-धायम प्राय वयो गोर मन में)

प्रभुजी आग वयो गोर मन में

राग न जिनमें शेष न जिनमें
तुम बिना देव न और सुहावे

तेरे दर्शन नयन करत जब
दृष भयो अति तनमें.

प्रभुजी०

वीरतीयां जागी जग भारी
सब जीवन की रक्षण कारी
इसलिये शिवपुर बसावे,

तुंही वसा नयनमें.

प्रभुजी०

आत्म कमलमें हुई गुमारी
मति इससे सुधरे हमारी
वीरमगाम सूरि लब्धि गावे,
तुंही वसा नयनमें.

प्रभुजी०

७८ आदिजिन स्तवन.

नाभीके दुलारे प्यारे
 मोरे मात मरुदे झुलना झुलावे,
 हाथमें रेशम दोर नाभी.
 नाभीजीके आगणे बाजे घुघरना घम घोर.
 इन्द्र इन्द्राणी सेवे जिनको,
 सुमगळाकी जोड नाभी.
 जिनजीके ध्याने नासे,
 करम कठोरही चोर.
 देव देवी मील मंगळ गावे,
 करती दोडा दोड नाभी.
 प्रभु भक्तिसे भव दुःख भागे
 हटे मोहका जोर.
 लब्धि सूरि शुभ भागे, गावे
 मीटे कर्मकी खोट नाभी.

७९ सामान्य जिन स्तवन.

(राग-गंधारीताल त्रीताल झुलना झुलाय आवोरी)

दिलडां मिलाय आवोरे दिलडां मिलाय
जिनजीको भाली हो जय जय बोले सैया
जय जय बोलो झुकझुक हांजीयरां दिलडां.
जानी जानी फानी ये दुनीयां तलसतने हा.
अबहु न पाये जनि मनवा दिलडा मिलाय
आवो आवो प्यारे मंदिरीयां बरसतमें हा.
धरशु लब्धि शिव चढवा दिलडा मिलाय.

८० (कच्छ) अंजारमंडन स्तवन.

(राग-मालव वतन आ मालव वतन)

प्रभु वंदन करुं प्रभु वंदन

व्हालु लागे मने प्रभु वंदन. अंचली

वासु पूज्य स्वामी शिवसुख गामी

आपो आपो प्रभु त्रण रतन प्रभु १

आजु बाजु सोहे धर्म जिनेश्वर

आदि प्रभुजी करे दीलहुं हरण प्रभु, २

काम कषाय ने दूर निवारी

कापो कापो प्रभु कर्म फंदन प्रभु, ३

मुख करनारा दुःख हरनारा

याचु भयो भवो तुमही शरण प्रभु, ४

अनादि कालधी भयवन भटक्यो

टालो टालो प्रभु भय भ्रमण प्रभु, ५

संवत् १९९४ साले

अजारे पाया प्रभु दर्शन प्रभु, ६

मृगी लक्ष्मण कीर्ति गुणगाई

चाहु चाहु प्रभु शिव सदन प्रभु, ७

८१ भद्रेश्वरजी स्तवन.

(राग-काली कमली वाले तुमपे)

भद्रेश्वरमां वीर प्रभुने प्रेमे प्रणाम
वीर प्रभुजी कामण गारा,
ध्यातां हृदये हर्ष अपारा.

बंदु वारं वार प्रभुने० १

वीर प्रभुजी प्रणमो भावे,
दुःख दोहग सब दूर पलावे.

नावे कदी संताप प्रभुने० २

माता त्रीशला देवी जाया,
छप्पन दिग्गुमरी हुलराया.

गाया सुर नर नार प्रभुने० ३

सुरगिरि पर प्रभुने ठावे,

अंगुठे प्रभु मेरु कपावे.

शक्तिना भंडार प्रभुने० ४

संगम आदि ए उपमर्ग कीधा,

सम भावे प्रभु ए सही लीधा.

प्रगट्यु केवलज्ञान प्रभुने० ५

पुण्ये प्रभुका दर्शन पाया,

दिलमें आनद रुच मनया.

याचु भवो भय सेव प्रभुने० ६

भक्तिक कमल विकसाया काले.

मूर्ति प्रभुकी दिनमणी छाले

त्रण भुवन आधार प्रभुने० ७

भवसागर में नैया हमारी,

डगमगती प्रभु करदो कीनारी

साचा नाविक आप प्रभुने० ८

सूरि लक्ष्मण शिशु कीर्ति गावे,

पद पंकजने नमतां भावे.

भावे लीला लहेर

प्रभुने ७ ९

८२ श्री भद्रेश्वरजी नुं स्तवन

(राग-जावो जावो हो मेरे साधु रहो गुरुके संग)

आवो आवो भविक जन, करो प्रभु वंदन
मूरति प्रभुनी मोहन गारी,

सोहे चंद वदन. आवो

भव त्राता प्रभु शिव सुख दाता,

करूं कोड वंदन. १

वीर प्रभुनी मूर्ति निरखी,

हर्षे भर्षा नयन.

त्रिभुवन स्वामी गुण गण धामी,

कापो जन्म मरण. २

आशरो प्रभुजी एक तमारो,

तुमही एक शरण.

कच्छ देशमां तीरथ मोडुं,

भविक मोद करण.

३

भरी कचोळां केशर केरां,

माहे गोली चदन

विध विध जाति पुष्प चढावी,

करो भवि पूजन

४

प्रभु भक्तिमा तान लगावी,

अर्पो तन मन धन.

प्रभु पद पकज पुजी भावे,

करो प्रभु नमन.

५

घणा समयनी चाह हमारी,

आज थथा दर्शन.

क्रोड धीछी करडे एक साथे
 तेम मरण दुःख कारी
 कोई प्रदेशे जग नहीं खाली
 जन्म मरण ज्यां न धारी भविक. ३

रंग छे पतंग जेम आ तन तेरो
 विणसी जशे क्षण वारी
 दार सुता सुत धन घर छोडी
 जतां वनीश लाचारी भविक. ४

राजा गया महाराजा गयाने
 गया छे इन्द्र मोरारी
 अचानक एक दिवसे उपडवुं
 आवशे तारी पण वारी भविक. ५

विषय विकारनी निद्रा लेतां
 दीठी न सुखनी वारी

(१२९)

अनेत भव भटकी ने पाम्यो

सुंदर नर अवतारी भविक ६

पामी समय नहि वृथा खोसो

करी ल्यो जन्म सुधारी

सूरि कमल चरणोनो सेवक

लब्धि कहेछे पोकारी भविक ७

(२)

(राग-ज्ञान कदी नवि थाय मूरखने,)

करवुं होयते थाय करमने करवुं होयते थाय

जीवे जाच्यु काम न आवे;

थायुं निरर्थक जाय करमने० १

पाच पाण्डव महा बळवंता ने,

त्तरम शरीरी कहाय

वनमांही पण ते रडवडीया,
दुःखे चार वर्ष जाय. करमने० २

ज्यां जळ त्यां थळ थळ त्यां जळ छे,
भरती ओट भराय

रंक राय थई मन मलकावे,
राजा रंक थई जाय. करमने० ३

कृष्ण वासुदेव त्रिखंड राणो,
जेने पग मूके खमा खमा थाय
जराकुंवर थी ज्यारे विंथाणों,
त्यारे जळ विना जीव जाय. करमने० ४

जेने घरमां खावा खूटयुं छे ने,
लोकोनी ठोकरो खाय

एवो पण जो नृप बने तो,
लाखो थी वंदाय. करमने० ५
सुभद्रा जेवी अति सतीना,

માથે કલંક પડ્યું થાય

તાંતળે ચાલણી થી જલ કાઢી

દ્વાર, ઉઘાડી પંકાય. કરમને ૦ ૬

જે ઘર ઘોડા હાથી ઘુલે,

પરિવાર ગણ્યો ન ગણાય

તેતો खाली खंडेर થયા ને ઘલી,

કુતરા ત્યાતો બીઆય. કરમને ૦ ૭

રાજા હરિશ્ચંદ્ર રાજ્યનો ધારી,

પ્રતિજ્ઞામા જ્યારે પકડાય

વનમા કુવરે ખાના માગ્યુ,

તેપણ આપીન શકાય કરમને ૦ ૮

જે તન વિજલી સમ અતિ ફલકે

જ્યા જડ નેત્ર ઠરાય

તે તન જ્યારે રોમે પીઢીયા

તેતો દેસી ન શકાય કરમને. ૯

सनतकुमार चक्री रूप जाणो
जेने जोवा देवता आय
गर्व कय्यो तयारे पलकमां पलट्यो
थई गई रोग मय काय करमने. १०
सूरि कमल चरणो ना प्रतापे
लब्धि थी कर्म कलाय
वीतरागना वचन प्रमाणे
चाले तो तेथी छूटाय करमने. ११

(३)

(राग-मान मायाना कर नारारे)

बाह्य शत्रु का नाश करायारे
पण अंतर शत्रुसे हराया
छायी मोह वादलकी छायारे
बनी केसी करमकी माया अंचली. १

करमे कुटाया भरमे भूलाया
 नरक निगोदे रुलाया
 करी मोह माया दुःखे हटाया
 सुख नहीं लेश तुने पायारे, बनी २
 मोहके मद से हो चक्रचूरा
 न रहा पापसे अधूरा
 ऋर करम करी झूले चेतनजी
 लाख चोराशी डुलायारे बनी ३
 यह जग पासा मानो तमासा
 छ सात दिनका वासा
 क्यों वहा फसते रंक विचारे
 जूठी यह सब बनी मायारे, बनी, ४
 अभेद्य स्यादवाद वप्र पर चढके
 नव तत्व महेल निरसायारे, बनी, ५
 आत्म कमल प्रकाशक गुण से

वीर्य लब्ध विकसाया
 सो बहादूर नर जाणो जगत में
 जेने अंतर शत्रुको हरायारे, बनी ६

(४)

मैं दिव्य नयन थी जोई,
 दुनिया नहि कोईनी होई.
 स्वार्थनी जाल मां रोई,
 निज गुण सघला दिया खोई
 अंचली०

अहीं होय माता तैतो बीजे भवै नारी
 पिता होय पुत्र और पुत्र थाय वैरी
 करमनी माया एम जाणे न मूरख सोई,
 मैं दिव्य० १

आज होय राजा तेतो काले थाये रंक
 अजब सरीखो एतो दुनिया नो ढंग
 अधिर जगत मांही,
 स्थिर नवी दीहु कोई. में दिव्य० २

मात पिता सुत बेनी भाइने भोजाई
 अंत काळे अळगु रहेवानु सौ भाई
 पोताना स्वार्थ माटे
 मगपण नाखे धोई. में दिव्य० ३

मनुष जतम पाई करी न कमाई
 नरभय रतन मी उमर जो खोई
 क्षण नाणी जगत में
 गाफिल है नर चोटी में दिव्य० ४

नप जप करी श्रुत चारित्र आराधी

(१३६)

आतम कमल विषे लट्ठिध सार्धी
ज्ञानीना चरण जई दुनिया ओ विछोही.
में दिव्य० ५

(५)

(चाल-सुणो चंदाजी)

सुनो चेतनजी ! आतम ज्ञान विना,
सवि-वातो खोटी ॥ नहीं ज्ञान थकी कोई
चीज मोटी ॥ सुनो चेतनजी ॥ अंचली ॥
तारुं क्षण क्षण आयुष्य टुटे छे ॥ तारुं
अन्तर धन मोह लुटे छे ॥ तारुं अमृत
भाजन फूटे छे ॥ सुनो चेतनजी ॥ १ ॥
फस्यो आठ कर्मना फंदामां, पळ्यो तेथी
गंदा धंधामां ॥ तारी धर्म नीति मळी

મંદામાં, સુનો ચેતનજી ॥ ૨ ॥ ત્હેં કામે
 ઘ્રતપણું વામ્યુ, તારું દિલ દુરાચરે જામ્યુ ॥
 તારું જ્ઞાન વધુ તેમાં નામ્યું ॥ સુનો
 ચેતનજી ॥ ૩ ॥ જગમાયા ક્ષણ ક્ષણ નાશે
 છે, તું ચિતહુ કેમ ત્યાં વાસે છે ॥ જો જ્ઞાને
 એ વધું માસે છે ॥ સુનો ચેતનજી ॥ ૪ ॥
 સરું આતમ જ્ઞાન જિનન્દ માસે, ગુરુ મુસ
 કમલે ગ્રહી દિલ રાસે ॥ રસ આતમ
 લબ્ધિ તળો ચાસે ॥ સુનો ચેતનજી ॥ ૫ ॥

(૬)

(માલા જપું છું તારા નામની, મોહનજી એ ચાલ

વાત વહું છું હુ વૈરાગ્યની, સામલ
 જો લોકો ॥ તેધિણ આ દુનિઆ હોલી

फागनी, सांभलजो लोको ॥ अंचली ॥
 समकित सहुमां पहेलुं, ते विण सवि काज
 घेलुं ॥ वातो अलेखे ज्ञान ध्याननी ॥
 सांभलजो लोको ॥ १ ॥ दुनियानी जूठी
 यारी, वृथा करे मारी तारी ॥ हालत बधी
 छे ए हेवाननी ॥ सांभलजो लोको ॥ २ ॥
 जावुं मसाण वासे, आखर एकदिन थासे ॥
 फेर करो कां मति माननी ॥ सांभलजो
 लोको ॥ ३ ॥ धर्म प्रकार वे छे, साधु
 श्रावक भेदे ॥ तेमां लगावो वृत्ति ताननी
 सांभलजो लोको ॥ ४ ॥ आत्म कमल
 विकसे, कैवल्य ज्योति निकसे ॥ लगे लय
 “लब्धि” दिखो जाननी ॥ सांभलजो
 लोको ॥ ५ ॥

(૭) સારાસાર દર્શક સજ્ઞાય

ચગ્યો સન્નિ સૃષ્ટીનો શુદ્ધારહાર-પ્રેથી મલતી ચાલ

જુઓ તમે સૃષ્ટિમાં કયા મારછે ।

જ્યાં જૂઓ ત્યાં એમા દુઃખ અપાર છે ॥

॥ સાક્ષી ॥

ધમણ ચલાવી શ્વાસની, રહીરે હસકાં સાય ।

હાય હાય કરી કહીં, મરણ વાદ કૂટાય ॥

જુઓ જ્યાં એ દુઃખના પ્રકાર છે ।

કહો ત્યાં તમે શો જોયો માર છે જુઓતમે ॥૧॥

॥ સાક્ષી ॥

જરા વ્યાપી દેહહી, મુશ્કેલી લાલો જાય ।

કાનો કામ કરે નહીં, અંશે નવિ મલાય ॥

જ્યાં એ દશા આવવા તૈયાર છે ।

કહો ત્યાં તમે શો જોયો માર છે. જુઓતમે ॥૨॥

॥ સાચી ॥

ધગ ધગતી જે ધસી રહી, એવી ચિત્તા ડ્યાંચ ।
 સજન તારા શરીરને, હાથે મુકશે લાલ્ય ॥
 બલ્યા પછી રાખનો આકાર છે ।
 કહો ત્યાં તમે શો જોયો સાર છે. જુઓતમે ॥૩॥

॥ સાચી ॥

કોઈ સુખ આભાસમાં માની રહ્યા અતિ સુખ ।
 મિષ્ટ વિષ નવિ માનતા જેમાં પાછલ દુઃખ ॥
 હાડ માસ રુધિર વિકાર છે ।
 કહો ત્યાં તમે શો જોયો સાર છે જુઓતમે ॥૪॥

॥ સાચી ॥

પુદ્ગલ આનંદી બની પુદ્ગલ દુઃખિયા થાય ।
 નારક પશુની યોનિમાં જ્યાં ત્યાં ગોદા ખાય ॥
 દુઃખકર એ સુખને ધિક્કાર છે ।
 કહો ત્યાં તમે શો જોયો સાર છે જુઓતમે ॥૫॥

(१४१)

॥ साखी ॥

आत्म कमलमां प्राणिया,

गुण परिमल महकाय ।

जड दुर्वास तजे थके सह गुण लब्धि सुहाय ॥

मले पछी मुक्तिनो प्रकार छे ।

आहा! आहा! एज खरो सारछे, जुओतमे ॥६॥

(८)

(राग-सिद्धाचलना वासी)

अनादि जगना वासी जीवडा करीले विचार

(अंचली)

आ जगमां जीवडा कोणछे तारु,

नाहक करतो मारुं मारुं

मर्यो अनंती वार जीवडा०

आत्म ज्ञान तें नही पिछाण्यो,

जडता भावे दिल आण्यो

पाम्यो दुःख अपार जीवडा०

विषय कषाय ना वासमां वसीयो,

आत्म भावमां नही दिल कसीयो

पापे थयो खुवार जीवडा०

रोप करेछे दुःखनो पोप,

तोप करे छे गुणनो शोप

सम भावे दिल धार जीवडा०

चार गतिना दुःख मां रुल्यो,

धर्म भाव तुं दिलथी भूल्यो

रखल्यो वारं वार जीवडा०

आत्म कमलमां धर्म वसावो,

उंच भावना दिलमां ठसावो

लब्धिसूरि सुखकार जीवडा०

९ उपदेश पद सञ्जाय.

चेतन क्यों भयमें भटकता है
विषय पानकर गर्भों में क्यों उंधा लटकता है
(अंचली)

शेर

मोहमयी यह भुमिका लगरहे दुःख के झाड
काल शिकारी चापडा देस तुं आखे फाड
नाग ज्युं उपर लटकता है विषय०
मोह लुटेरा लुटता कर रहा जहा निवास
अमर पर सनी जीनके डाल गलेमें पाम
आत्म धन लूट अटकता है विषय०
भय भीतर रहता सदा राग सिंह बलवान
द्वेष केसरी भी जहा फरत जीवो की हान
प्राण ले नीचे पटकता है विषय०

(१८४)

लाख चौरासी रूलता होता नहीं होशियार
बार बार इस स्थान पे खाता है खुबमार
समझ कर क्यों न छटकता है विषय.
आत्म कमलमें जपलियो श्रीजिनवर का नाम
लब्धि सखी संजम मिले जावेगा शिवधाम
फिर नहीं भवमें भटकता है विषय०

(१०)

(राग-भारवका डंका आलममें)

तुं चेत मुसाफ़ीर चेत जरा,
क्यों मानत मेरा मेरा है. अंचली.
इस जगमें नहीं कोई तेरा है,
जो है सो सबही अनेरा है.
ये सब स्वारथका मेला है,
क्यों मानत मेरा मेरा है. १

नहीं शाश्वत तेरा डेरा है,
 कुछ दीनका जहा बसेरा है,
 कर्मोका जहा सुत्र घेरा है,
 क्यों मानत मेरा मेरा है. २

ए काया नश्वर तेरी है,
 एक दीन वो राखकी ढेरी है,
 जहां मोहका सूत्र ओधरा है,
 क्यों मानत मेरा मेरा है. ३

चुरी ये दुनियादारी है,
 दुःख जन्म मरणकी क्यारी है,
 दुःख दायक भयका फेरा है,
 क्यों मानत मेरा-मेरा है. ४

गति चारकी नदीयो जारी है,
 भय सागर नडाही भारी है

समता वश जहां बसेरा है,
 क्यों मानत मेरा मेरा है. ५
 मन आत्मकमलमें जोड़ दियो,
 लब्धि माया को छोड़ दियो.
 गुण मस्तक संयम शिरा है,
 क्यों मानत मेरा मेरा है. ६

[११]

(राग रंग तो पसंग तेरो कलही उड़ जायगो)
 थोड़ी तेरी जिंदगी है क्यों तु गुमाता है
 जिंदगीमें बंदगी तो प्रभुजीका नाम है.
 जिंदगीमें ॥ १ ॥
 विषयोंको छोड़ यार जोड़ प्रभुजीसे प्यार
 ज्ञानमें गुलतान होजा यही सुखधाम है.
 जिंदगीमें ॥ २ ॥

जिस्में है फनाह तेरा कहा भाई मान मेरा
विजली विकास जेसा नहीं स्थिर ठाम है.

जिंदगीमें. ॥ ३ ॥

धन, धान, मान, तान क्षणमें विनाशी जाण
डाभकी अणीपे लगे बुंद ज्यु तमाम है.

जिंदगीमें. ॥ ४ ॥

भज भज जिन देव तज सब खोटी देव
शिवपुर धाममें फिर तेरा तो मुकाम है.

जिंदगीमें ॥ ५ ॥

कमल विकासी चहेरा रहे हर दम तेरा
आतम लब्धि जो लाभे यही तोरा काम है.

जिंदगीमें ॥ ६ ॥



(१२)

राजा कवडिया खोल रस की बूँद परी-ए चाल

चेतन समय पिछाण,

न कर विषयन गारी ॥ अंचली ॥

शंवल को नहीं भुलना प्यारा,

स्वजन कुटुंबी नहीं कोई धारा ॥

जूठा भाई माई भगिनी पसारा,

अंते सभी जुदे जाण ॥ न कर ॥१॥

द्रव्य तेरा घरमें हि रहेगा,

तिरिया जन नहीं साथ करेगा ॥

स्वजन शरीर चितामें धरेगा,

जावे एकलडी जान ॥ न कर ॥२॥

ये दुनिया है मुसाफिरखाना,

आज का वास तुज यहां ही मनाना ॥

कलका नहीं है कुछ भी ठिकाना,
 धर्म से लहो, शुभ ठाण ॥ न कर ॥३॥
 यौवन शश पर धरी जरा कुत्तिया,
 काल शिकारी बाणसे जुत्तिया ॥
 जरूर होंगा तुं क्यों है सुत्तिया,
 समज समज हेवान ॥ न कर ॥४॥
 बीर बटाउ शिवपुर चल तु,
 क्यों फसता जग माया में यु ॥
 मिल सद् गुरुमे भक्ता मिले ज्यु,
 न पड़े फिर दुःख खाण ॥ न कर ॥५॥
 आत्म कमले केवल महके,
 देख देख तू कर्म को दहके ॥
 ले आनंद शिवपुर में रहके,
 लब्धि मिले दिलो जान ॥ न कर ॥६॥

(१३)

औ आर्जिदगानी मनु भवनी एले जाय छेरे एचाल

खरे आ मानव जाति स्वाति,

जल वही जाय छेरे ॥

विवेक रूप मछली मुखमां,

आवी मोती थाय छेरे ॥ टेक ॥

विवेकहीन ज्यां जीवन जातुं,

त्यां उत्तम जल विष सम थातुं ॥

कहीं क्षार कहीं कंटक आधि कहाय छेरे

॥ खरे आ ॥ १ ॥

ते मोती मरणादि न टाले,

आ मोती दुःख सघला खाले ॥

जनम मरण दुःख टाली,

शिव पमाय छेरे ॥ खरे आ ॥ २ ॥

विषय विलासे जे नर अडिया,
 ते आ शुद्ध मोतीने नडिया ॥
 शुभोदरमा स्थित रसो,
 पिगलाय छेरे ॥ खरे आ ॥ ३ ॥

कषाय तापो बहार न काढे,
 तेतो मोती आव बगाडे ॥
 श्याम बनी नहीं कोडी,
 किम्मत पाय छेरे ॥ खरे आ ॥ ४ ॥

तुच्छ आशा सुख झरणे मोही,
 सुख सागरनी ल्हरो खोई ॥
 क्षीर सागर दइ साटे,
 लवण लेनाय छेरे ॥ खरेआ ॥ ५ ॥

आत्म कमल ज्या निर्मल थातुं,
 त्यां आव तेनुं चढियातु ॥

(१५२)

लाञ्छि आव ने मली,
जगत पंकाय छेरे ॥ खरेआ ॥ ६ ॥

(१४)

(कुवजाने जादू डारा-ए चाल)

जिया मोहने जग भरमाया,
अब तुं छोड जगतकी माया
॥ जिया ॥ टेक ॥

कोह लोह के फंदको-छंडी,
तजदे हरामी माया ॥
मान नादान को तज मेरे प्यारे,
धूरी है इनकी छ्राया ॥ जिया ॥ १ ॥
एक एकने करट आदिको,
गति नरक में फसाया ॥

चारों के वश पडकर चेतन,
वृथा तैं जनम गमाया ॥जिया ॥२॥

हास्य रति और अरति काढी,
मोह मिथ्याच्य हटाया ॥
समकित मोह और मिश्र मोह को,
तज तीन वेद पराया ॥जिया ॥३॥

वेद विषे क्यों अधा होकर,
नाश करे यह काया ॥
इस पापीसे कामी जनोंने,
इह पर भय दुःख पाया ॥जिया ॥४॥

भव जुगप्सा शोक न कर तु,
ये है दुनिया दुःख दाया ॥
इस पयडी का सग निवारो,
तज हत्य शिग्रु सुख आया ॥जिया ॥५॥

(१५४)

अनुभव सुखके टालन हारे,
क्यों दिल इनमें ठाया ॥
लब्धि जिनवर चरण कमल को,
पाया सो नहीं गभराया ॥जिया ॥६॥

(१५)

(गझल)

बनी मिट्टी की सब बाजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥ अंचली ॥
मिट्टीका है शरीर तेरा,
मिट्टीका कपडा पहेरा ॥
मिट्टीका मेहल रहा छाजी,
उसीमें होत क्यों राजी ॥बनी०॥१॥
घरेणा मिट्टीका तेरा,
है मिट्टी का पलंग प्यारा ॥

तेरा मिट्टी का है वाजी,

उसीमें होत क्यों राजी ॥वनी०॥२॥

जगत में वस्तु है जो जो,

मिट्टीमें सब मिले वो वो ॥

इसीमें क्यों बना पाजी,

उसीमें होत क्यों राजी ॥वनी०॥३॥

दशा निज आत्म की शोधो,

जगत मायासे मन रोधो ॥

यही एक बात है ताजी,

उसीमें होत क्यों राजी ॥वनी०॥४॥

कहे लब्धि सदा सेवो,

जिनाधिराज शुद्ध देवो ॥

बनो शिव मुख के माजी,

उसीमें होत क्यों राजी ॥ वनी० ॥ ५ ॥

पू० पा० आचार्य देव श्रीमद
विजयलक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज
के शिष्य रत्न मुनि श्री

कीर्तिविजयजी विरचित

-॥ नूतन गहुंली संग्रह ॥-

गहुंली नं० १

पू० पा० विजयानंदसूरीश्वरजी महाराज की
(राग-सिद्धाचल के वासी)

विजयानंद सूरीराय

गुरुने प्रातः प्रणाम

पंजाब देशे लहेरा गामे

शुभ योगमां जन्म-पामे

क्षत्रिय कुल मोझार गुरुने प्रातः प्रणाम १

बालपणे वैरागी थड्ने

ढुडक मतमा दीक्षा लईने

सुत्र कीवो अभ्यास

गुरुने प्रातः प्रणाम

२

सत्य तत्त्वोनी शोध करता

साचा तत्वो हृदयमा धरता

झट कीवो स्वीकार

गुरुने प्रातः प्रणाम

३

विहार करीने गुजरात आवे

शुद्ध मने सवेगी थावे

गुरु बुटेराय धार

गुरुने प्रातः प्रणाम

४

पंजाब आदि देशो करीने

जनेक संकटो आगे धरीने

कर्यो बहु उपकार

गुरुने प्रातः प्रणाम

५

विलायत आदि देशो जाणे

नाम आत्माराम बखाणे

अजब पुण्य प्रकाश

गुरुने प्रातः प्रणाम

६

सुंदर ग्रंथनी रचना कीधी

मिथ्या मती ने दुरे कीधी

ज्ञान तणा भंडार

गुरुने प्रातः प्रणाम

७

संवत् १९५२ वर्षे

जेठ सुदी आठमने दिवसे

पहोंत्या स्वर्ग दुवार

गुरुने प्रातः प्रणाम

८

देशना लब्धि देजो प्यारा

सुंदर लक्षण अंगे सारा

कीर्ति तणो नहि पार

गुरुने प्रातः प्रणाम

९

गहुंली नं. २

(राग-सिद्धाचल शिखरे दीवोरे)

विजय कमळसूरी रायारे

गुरुजी गुणना दरीयारे.

धन्य धन्य तस पिता मायारे,

गुरुजी गुणना दरीयारे.

देश पंजाब गामे सरसारे,

गुरुजी गुणना दरीयारे.

क्षत्रिय कुळे जन्म पायारे.

गुरुजी गुणना दरीयारे.

बाळवये संयम चरीयारे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 लई चारित्र जगमां विचरीयारे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 गुरु ज्ञान ध्यानमां पूरारे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 कर्म अरि जीतवामां शूरारे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 राज नगरे संवेगी दीक्षा पायीरे.
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 गुरु धार्या लक्ष्मी सूरि निर्मायीरे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 पाटणमां सूरि पद पायारे,
 गुरुजी गुणना दरीयारे.
 नाना गामे उपकारे विहरीयारे,

(१६१)

गुरुजी गुणना दरीयारे.
शांत मुद्राथी अति सोहेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
जोई गामना सघो मोहेरे.
गुरुजी गुणना दरीयारे,
महावद छट्ट अति कारमीरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे
जलालपुरमां देहने विरमीरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
सूरि लक्ष्मण कीर्ति नमे भावेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.
गुरु मूरतिने चित्तमां बसावेरे,
गुरुजी गुणना दरीयारे.

गहुंली नं० ३

पू० आचार्य देव श्रीमद विजयलक्ष्मि
सुरीश्वरजी महाराज की

(राग-दिवस दीपे आज मंगलकारी)

साहेली मोरी आज सुरीजीने वंदो
जेथी टळशे भवजळ फंदो. साहेली. १
गुरु समता रसना दरीया,
गुरु ज्ञान गुणे करी भरीया.
संसार समुद्रथी तरीया साहेली. २
ज्ञान ध्यानमां चित्तने जोडे,
कर्म बंधने पडता तोडे.
वळी प्रमत्त दशाने छोडे साहेली. ३
शास्त्र रटनमां सुरीजी रसीया,

- आत्म रक्षणतामा छे वसीया.
 मोह मायामा नहि फसीया साहेली. ४
 स्यादवाद शैलीना छो जाता,
 भयजळ दुनता जीवना त्राता.
 शुद्ध समकित ना छो दाता साहेली. ५
 एक त्रिध संयम पालणहारी,
 द्वित्रिध देशना दो छो सारी.
 मन वच काय त्रिगुप्ति धारी साहेली. ६
 विकृथा चार दूर परिहरता,
 पंच महाव्रत शिरपर धरता.
 षड जीव कायनी रक्षा करता साहेली. ७
 सात भयोना टालणहारी,
 आठ मदोना वारणहारी
 नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धारी साहेली. ८
 दस त्रिध यतिधर्म वहनारा,

- अग्यार अंग चित्त धरनारा.
 बार उपांगने जाणनारा साहेली. ९
 तेर काठीया दूर करनारा,
 चौदमा गुणस्थाने चढनारा.
 सिद्ध पंदर भेदो जाणनारा साहेली. १०
 सोल कषायने दूर मूकनारा,
 सत्तर संयम शुद्ध वरनारा.
 सहस्र अठार सीलांगना धारा साहेली ११
 ओगणीश काउस्सग दोष निवारार,
 विंशती स्थानक आराधनारार.
 एकवीश श्राद्धगुण कथनारार साहेली १२
 बावीस परिसहने जीतनारार,
 त्रेवीश विषयना दोष हरनारार.
 चोवीश जीन आणा वहनारार साहेली. १३
 “लब्धिसूरीश्वर” नमतां भावे,

दुर्गति पडतां दूर हठावे.
तस कीर्ति गुरु गुण गावे साहेली. १४

गहुंली नं० ४

(राग-आवो आवो पासजी)

बेनी तमे लब्धि सूरीशने वंदारे
जेथी मळशे शिवसुख कंदो, बेनीतमे १
गुरु बाळपणे संयम बरीयारे,
भव सागरथी गुरु तरीयारे.
ज्ञान गुणे कंरी भरीया बेनी तमे २
गुरु बाळ पणे ब्रह्मचारी,
नव ब्रह्मचर्य गुप्ति धारीरे.
संयम रमने विस्तारी बेनी तमे. ३
गुरु पच महाव्रत धारीरे,

षड जीव रक्षा करे सारीरे.

सात भयने दूर निवारी बेनी तमे. ४

अभ्यंतर बाह्य तप तपतारे,

अनादि काळना मेलने खपतारे.

शुद्ध जापने हृदये जपता बेनी तमे. ५

कंचन सम गुरु कायारे,

छोडी आव्या मोह ने मायारे.

आत्म ध्यानमां तान लगाया बेनी तमे. ६

गुरु विण जगमां कोण तारेरे,

दुर्गति पडता जीवने वारेरे.

भव अटवीथी पार उतारे बेनी तमे. ७

शिष्य समुदाय सुंदर सोहेरे,

ज्ञान ध्यान थी कर्म विछोहेरे

भवि जनना मनडा मोहे बेनी तमे. ८

तत्वातत्वनो उपदेश आपीरे

सौ हृदये समकित थापीरे
 पडता बचावे भव वापी वेनी तमे ९
 पुरव पुण्ये गुरुजी मळीयारे,
 दुःख डुंगर सौनां टळीयारे
 गुरु कल्प तरु सम फळीया वेनी तमे १०
 विचरी विचरी अर्हा आव्यारे
 स्ररी चरणोनी सेवा पायारे
 तस कीर्ति ए गुरुगुण गाया वेनी तमे ११

गहुंली नं० ५

पू० पा० आचार्यदेव
 श्रीमद विजयलब्धि स्ररीजी महाराज
 (राग-गझल)

विजय लब्धिस्ररी राया
 पुरवना पुण्य थी पाया

फल्या सौ काज हमारा

मल्या जंगम सूरि राया विजय १

परिवार साथमां लाया

संघना मन हरसाया

पावन थई आज मुज काया

सूरी शीतळ मळी छाया विजय २

प्रभु आज्ञाने शिर धरता

विविध देशोमां विचरता

जगे जगे लेक्चरो करता

अजैन ना दीलने हरता विजय ३

सुरी षड शास्त्रना ज्ञाता

प्रभु वाणी सदा पाता

शुद्ध समकित ना दाता

भवि जीवना सुरि त्राता विजय ४

जलनिधि जीम गंभीरा

सुवर्णसम दीपती काया

नक्षत्र गणमां शशी सोहे

तिम सशिष्य सूर्यराया विजय ५

पाटणमा दीक्षा विरोधी

तोडाव्यो कायदो आपे

जिन शासन ध्वज फरकारी

जड जडवादनी कापे विजय ६

जमानावादी जुथोने

युक्तिओ देइ समजावे

सूर्ययश गान करीने

सुरी पाये शिर झुकावे विजय ७

शास्त्रार्थो सुरीजीए कीधा

वादी वृद्धो हरी लीधा

सुणी विद्वत्ताभरी वाणी
प्रणमी ते गया सीधा विजय ८
शिष्याने वांचना देता
गच्छना छे खरा नेता
वाणी पीर्युष पूर वहेता
रस हर्षे भवि लेता विजय ९
शांति सागरमां रमता
कषायो कारमा शमता
इन्द्रिय विषय ने दमता
गुरु कीर्तिने बहु गमता विजय १०

गहुंली नं. ६

(राग-मथुरामां खेल खेली आया)

लब्धि सूरी महाराज
व्याख्यान रुडा सुणावो.

भव अटवीमां भमी रह्या छे,	
शिवपुर पंथने वतावो	व्या १
स्वरूप वतावो धर्मना मर्मनु	
साचा तत्त्वो ओळखावो	व्या २
हृदय भूमिने साफ करीने	
धर्मना बीज रोपावो	व्या ३
निडर वक्ता थर्द शासनमां	
कुमत पंथीने हटावो	व्या. ४
समय वादीने युक्तिओ आपी	
साची श्रद्धाने करावो	व्या. ५
अज्ञान तिर्मिरमा भटकी रह्या छे	
ज्ञान दीपक प्रगटावो	व्या. ६

शुद्ध धर्मना मार्गे चढावी	
मोहना बंध छोडावो	व्या. ७
अम सेवकपर कृपा करीने	
ज्ञान पीयूष पीलावो	व्या. ८
विवेक दीपक हस्तमां आपी	
कुमार्गे पडता बचावो	व्या. ९
देव गुरुने धर्म ओळखावी	
विरती नारीने वरावो	व्या. १०
व्याख्यान वाचस्पति सुरिजी	
कविओमां श्रेष्ठ कहावो	व्या. ११
तारागणोंमां सोहे शशी तिम	
सशिष्य सुरी सोहावो	व्या. १२
अम पुरमां आप पधारी	
आनंद अति वर्तावो	व्या. १३

सर्व साहेली मळी अही आवो
 आतम ज्योत जगावो व्या. १४
 वाणी सुणवा तलसी रह्याछे
 वचनोनी धारा वर्पावो व्या. १५
 तारणहारीने लब्धि धारी
 कीर्तिना कष्टो मिटावो
 व्याख्यान रुडा सुणावो १६

गहुली नं० ७

(राग-सजनी मोरी)

बेनी मोरी लब्धिसूरीजी पधार्यारे
 बेनी मोरी संघना हर्ष वधार्यारे
 बेनी मोरी परिवार साथे गुरु आवेरे
 बेनी मोरी बाळ शिष्यो साथे छावेरे

गुजरात सौराष्ट्र ने पंजाब	
विचरी कीधो उपकार	सदा०
मारवाडने दक्षिण मातो	
उपकार नो नहि पार	सदा०
गुरु आज्ञा थी जोधपुर शहेरे	
पधार्या गुरु चोमास	सदा०
संघमां आनंद मंगल वर्ते	
विघ्न सवि थाय नाश	सदा०
धिपाक सूत्रने मलया-संदरी	
प्रवचन थाय सुखकार	सदा०
वकील हाकमने जैनेतर	
आवे व्याख्यान मोजार	सदा०
पुण्यवंत नरोना चरित्र सुणता	
हृदय थाय शुद्ध वास	सदा०

महा भाग्ये गुरुश्री मलीया	
अजन पुण्य प्रकाश	सदा०
साथमा सुरेन्द्र ने हेमेन्द्र	
महेन्द्र तो भक्तिकार	सदा०
जश विजय तो गुरु यशने	
बगडावे त्रिदिन मौजार	सदा०
गुरु हस्ते सखीश्वर पदने	
पामी थया प्रख्यात	सदा०
प्रमत दक्षाने दूर हठावी	
मदोने मारी लात	सदा०
अष्ट प्रवचन माता रूडी रीते	
पालो छो गुरु राज	सदा०
कीर्ति कहे गुरुपद सेवार्थी	
मलशे शिवपुर साज	सदा०

गहुली नं० ९

राग-छोटी बड़ी सैंयारे

लक्ष्मण सूरिजीरे वंदना मोरी धारना	
अति हर्ष हुआ मुजे गुरु के दर्शन में	२
भवाब्धि सेरे नाविक वन तारना	१
भव भव भटक्यो मोह मेदानमें	२
अवनहि राचुरे कर्मोसे मुझे वारना	२
वीरता धीरता सोहे गंभीरता	२
वीरती नारीरे हमेभी वरावना	३
अमृत धारा देशना देकर	२
पापो को कापोरे भविक नर नारना	४
शास्त्र विशारद सोहे शासनमें	२
ज्ञान दीपक सेरे अज्ञानता हटावना	५
जैन जैनेतर आवे व्याख्यानमें	२

(१७९)

वाणी सुणकेरे हर्षितहोवे अमापना ६
सुरीजीकी कीर्ति देशो देशमा २
फली अतिहीरे बंदत वार वारना ७

गहुंली नं० १०

(राग-जावो जावो हो मेरे साधु)

आवो आवो हो मारी बहेनां करो गुरु वंदन
चालो चालो हो मारी सैयर हरो कर्म फंदन
अचली.

गुरु वाणीको सुणतां भावे मिटे जन्म मरण
प्रभुवाणी को गुरुजी सुणावे टाले भव भ्रमण
आवो० १

गुरु मल्या छे महा उपकारी याचो साचु शरण

अमृत जैसी मीठी वाणी करो हृदय मनन
आवो० २

एकी धारा उपदेश देके कापे कर्म कठन
तरण तारण है गुरुराया करो भावे नमन
आवो० ३

शुद्ध प्ररूपणा गुरुजी करता करो भावे श्रवण
मेघ गर्जारवथी मोर हर्षे तिम सौ सुणी वचन
आवो० ४

पंच महाव्रत पालनहारा करता इन्द्रिय दमन
षड काय रक्षा करनारा करे क्रोधादि शमन
आवो० ५

प्रमत्त दशाको दूर हटाके करे विदेश गमन
सच्चे ध्यानी ज्ञानी सुकानी सेवो गुरुके चरण
आवो० ६

ललितलक्ष्मणसुरीश्वरजीकी करो भक्तितन मन
 जेथी जगमा कीर्ति जामे प्रगटे आत्म धन
 आवो० ७

गहुंली नं० ११

(राग रस्सीया बंधावो भैया)

होले मील आरो सैया गुरु गुण गावोरे
 गंभीरता है भारी सुरत मनोहारी
 भव जल तारण नैया गुरु गुण गावोरे १
 गुरु गुणपते आये मंत्रके मन में माये
 हर्ष अतिही बैयां गुरु गुण गावोरे २
 भगवतीजीकी राणी गणधरोमे गुंथाणी
 गुनां गुनोरे सैया गुरु गुण गावोरे ३
 गुरु है मने प्रानी गुनाये भीठी राणी

नर नारीने गुण गैयां गुरु गुण गावोरे ४
 शांत दांत त्यागी शिषरमणी के रागी
 आत्म आनंद लैयां गुरु गुण गावोरे ५
 वाणी सुभाको पावे भविजन मनको भावे
 सुरीजीकी बोली जैयां गुरु गुण गावोरे ६
 लक्ष्मण सूरुजीको वंदन हमारा कोडो
 कीर्ति जग फेलैयां गुरु गुण गावोरे ७

गहुंली नं० १२

(राग-भैखरे उतारो गजा भरथरी)

सद गुरु देशना सांभळो

मळी सौ नर नारजी

दश द्रष्टांते दोहिलो

पाभ्या नर अवतारजी

सद० १

दान शिष्य तप भारने

भायो हृदय मोजारजी

श्रावकनी करणी सदा

पाळो यत्ने विस्तारजी सद० २

चंदरवा दश ठाममा

बांधो चतुर सुजाणजी

समकितनी शुद्धि करो

ममजो साधु ज्ञानजी सद० ३

अणगल पाणी नचि पीयो

धरो धर्ममां न्यायजी

गरी भोजनने तजो

तजो अमक्ष्य पानजी सद० ४

धर्म मूढ विनय वक्ष्यु

उत्तमप्यन मोजारजी

विनय विण विद्या नहि

नही तप वीरती नारजी सद० ५

विधि पूर्वक क्रिया करो

मेळवी ज्ञान भंडारजी

दर्शन शुद्धि ने करी

वरो विरती नारजी सद० ६

कर्मों उपाडी लई जशे

चेतो जल्दी चेतनजी

मोह माया छे कारमां

चितामां बलशे तनजी सद० ७

भविष्ये लख्या लेखजे

नहि जाशे भूसायजी

वनमां नहि छोडे कर्मरे

भोयराके हवेली मांयजी सद० ८

वीरवाणी हृदये धरी

(१८५)

धरो धर्ममां टेकजी
लक्ष्मण सूरीजीनी देशना
सुणता लहो त्रिवेकजी सद० ९
कीर्ति जगमा जामणे
मळये शिवसुख सारजी
जानी गुरु मळे भाग्यथी
खरा गुरु आधारजी सद० १०

गहुंली नं० १३

(राग-आदिसे अरिदंत अगधेर आवारे)

वेनी वदो गुरीधर रायने चहु भावेरे
जेन ग्रामत गिरताज गुरीजी रुहावेरे
वेनी० १
गभीर गुणे मयो आप गुरीजी रायरे

शुभ लक्षण पारावार अंगे सोहायारे
वेनी० २

त्रण भुवनमां यश गान मूरीना गवायारे
मधुरी वाणी सुणावी मन मलकायारे
वेनी० ३

मयूर जिम जोई मेघ अति हरखावेरे
तिम वाणी सुणावी रसाळ मन मलकावेरे
वेनी० ४

वाणी गुण खाणी सुणो भवि प्राणीरे
शुद्ध श्रद्धा भक्ति भाव दीलमां आणीरे
वेनी० ५

मिथ्यात्व तौमिर हणीने ज्ञान प्रकाशेरे
जिम विकसित पुष्प सुगंध अति सुवासेरे
वेनी० ६

(१८७)

जाहैर प्रयचन करता गच्छना धोरीरे
पड शास्त्र तणा छो जात हाथमां दोरीरे
वेनी० ७

मरु पंजाबने मोगल देश विश्वरीयारे
गुरु हस्ते केर प्राणी संयम वरीयारे
वेनी० ८

लक्ष्मण मुरीजी की वाणी सदा सुणीयेरे
धाय कीर्ति कमलाकार कर्मने हणीयेरे
वेनी० ९

गहुंली नं १४

श्री भगवती घमनी गहुंली
राग-भरतनी पाटे भूपतीरे

भगवती घमनी वाचनारे

सुनो भवि आज गुनुणा ।

श्रद्धा भक्तिथी सुणतारे

सीधे सघळा काज सलुणा ॥

गौतम स्वामी प्रश्नो पूछेरे

छत्रीश सहस प्रमाण सलुणा ।

प्रश्नना उत्तर आपतारे

गोयम कही भगवान सलुणा ॥

एक श्रुतस्कंधे कह्यारे

उद्देशा एकतालीश सलुणा ।

शतके शतके उद्देशा घणारे

भाखे श्री जगदीश सलुणा ॥

अठ्ठासी हजार बेलाखनुरे

पद तणुं प्रमाण सलुणा ।

द्रव्यानुं योगथी भयुरे

ज्ञाननी छे ए खाण सलुणा ॥

नाम त्रण छे ए सूत्रनारे

पहेलु पांचसुं अंग सलुणा ।

बीजुं विवाह पन्नती बीजुरे

भगवती सूत्र सुरग सलुणा ॥

सर्पक्षेर लिम उत्तरेरे

मत्रे तणे प्रयोग सलुणा ।

तिम ए सूत्र सुणतां थकीरे

नासे भवनो रोग सलुणा ॥

स्वस्तिक धुप दीपक करोरे

अंग पूजन उदार सलुणा ।

गुरु पासे शुद्ध भावथीरे

सुणता भवनो पार सलुणा ॥

संग्राम सोनीये सांभल्युरे

आत्मने सुखकार सलुणा ।

प्रश्ने एक सोनीये पूजतारे

एम छत्रीग हजार सलुणा ॥

सदगुरु आगल भावथीरे

सुणो सौ नरनार सलुणा ।

भाग्य उदये सुगुरु मल्यारे

ज्ञान तणा भंडार सलुणा ॥

लब्धिसूरिजी पसायथीरे

चोथो आरो वरताय सलुणा ।

सुरीजीनी देशो देशमारे

कीर्ति अति फेलाय सलुणा ॥

गहुंली नं. १५

(राग-भारतका डंका आलममें)

गुरु मारा गुण गण भंडारी

गुरु वाणी अति छे हितकारी

सुणी हर्षे सौ नरनारी

प्रभु वाणी अमने सुणावोने १

व्याख्यान शैलीनी अजब छटा

कंपाव्या विरोधी हस्ति भटा

अति तरबोल गुरु ज्ञानघटा प्रभुवाणी २

गुरु जैन शासनने दीपागोछो

अज्ञान तिमिरने हटावो छो

शिवपुर पंथ बतावो छो प्रभुवाणी ३

मनोहर प्रगचनने आपी

धर्म ध्याने दील दीधा थापी

त्यां आतम ज्योत अति व्यापी.प्र ४

मोह मायाना पिंडने दहनारा

अनुकुल प्रतिकुलता सहनारा

शुद्ध यतिधर्मने वहनारा प्रभुवाणी ५

शुद्ध परुपणा सुरीजी काता

पडशास्त्र ना ज्ञानने मन धरता

जैन जेनेतर दील हरता प्रभुवाणी ६

नव ब्रह्मचर्य गुप्तिना धारी

मद आठने दीधा दूर वारी

गुरुवाणी लागे बहु प्यारी प्रभुवाणी७
शांतमुद्रा अति शोभी रही

सूरीलक्ष्मण वाणी सरीत वही

तस कीर्ति ले आनंद चही प्रभु० ८

गहुंली नं. १६

(राग-ज्ञान कदि नवि थाय मुखने)

लक्ष्मण सुरी गुरुराय

भवि वंदो लक्ष्मण सुरी गुरुराज

पुण्य उदयथी गुरुश्री मलीया;

फलीया मनोरथ आज भवि.

बालवये संसार तजीने,

लीधु चारित्र स्वीकार भवि.

ज्ञान ध्यान मां मस्त वनीने,
करता आत्म उद्धार

भवि

ब्रह्मचर्य तेजे दीपे काया,
उजवल चंद्र समान

भवि.

मात पितानो वंश दीपाव्यो,
धन्य जनम प्रमाण

भवि.

न्याय ज्योतिषमां विद्वता सारी,
करता शास्त्र अभ्यास

भवि.

शुद्ध परूपण गुणथी गुरुजी,
करता मिथ्यात्व नाश

भवि

विविध देशमा गुरु श्री विचरी,
कीधो बहु उपकार

भवि.

लान्घि गुरीश्वर शिष्य कशयो,
गुरीश्वर पदना धार

भवि.

तत्त्व त्रयीनुं स्वरूप बतावी,	
कराव्युं साचुं ज्ञान	भवि.
गुरुपद सेवो भावे भवियां,	
धरी दील एक ध्यान	भवि.
पद्म सम विकसित मुखडु,	
समकितना दातार	भवि.
अन्य शास्त्रोना पण अभ्यासी,	
गुरु गुण तणा भंडार	भवि.
गंभीर नादथी वाणी मधुरी,	
सुणावो छो गुरुराज	भवि.
सेवक कीर्ति गुरु गुणगावे,	
शिव सुख चाहना काज	भवि.

(૧૯૫)

ગહુલી નં. ૧૭

(રાગ-દિવસ દીપે આજ મંગલકારી)

ઘેની સુણો આજ ગુરુજીની વાણી
ધરી ઉલટ હૃદયમાં આણી ઘેની
ગુરુરાજની દેશના ચાલો,
જ્યા સૂત્ર સિદ્ધાંતની સાલો
કર્મ પિઢને થાલી નાલો ઘેની ૧
અમક્ય વસ્તુઓને તજજો
શીલ વ્રત શુભગારને મજજો
નિત્ય જિનવરને ધ્યાને મજજો ઘેની ૨
દુર્લભ માનવ જન્મને પામી,
ઘેટફી નાંચશે નહિ કામી
વનો શિવસુધના તમે ગામી ઘેની ૩
પ્રભુ દર્શન કરવા જાવે,

पछी गुरु वंदन करो भावे

सुणी व्याख्यान दिलमां ठावे बेनी ४

सुनी व्याख्यान मनमां धारो,

घरे जइने पाछु विचारो

मोह माया रीपु मद मारो बेनी ५

मधुर वाणीथी रंजन करता,

भवि जीवना मनने हरता

सुणी वाणी केइ प्राणी तरता बेनी ६

अलगण पाणी कदी नवि पीजे,

नित्य दान सुपात्रे दीजे

नर भवनो लाहो लीजे बेनी ७

नवा व्रत पञ्चखाणने कीजे,

जेथी कारज सघलां सीजे

सूरीलक्ष्मण कीर्ति वंदीजे ।

गहुंली नं. १८

श्री वारसा सूत्रनी

(राग-दिवस दीपे आज मगळकार्ये)

सखी सुणो आज वारसासुत्र	
जेथी थाय आतम पवित्र	सखी
सर्व शास्त्रोमां शिरोमणी जाणो	
जेम तारामां चंद्र वखाणो	
ज्या आगमनाछे प्रमाणो,	सखी. १
न्याय प्रणीतमा जेम राम	
रूपे रम्भा सुरूपे काम	
मोहे देवोमा इन्द्र समान.	सखी. २
प्रथम वीर चरित्र सुहावे	
सुणो पार्थ चरित्रने भावे	
पछी नेम प्रभुजी कडारे.	सखी. ३

आंतरा चोवीश जिनना जाणी	
ऋषभदेवनं चरित्र वखाणी	
पछी स्थविरावली मन आणी.	सखी ४
संवत्सरी पडिकमणुं कीजे	
समस्त मुनिओने वंदीजे	
भावे चैत्य परिपाटी कीजे	सखी. ५
साधर्मी वात्सल्य करीने	
अट्टम तप तपस्या वहीने	
वरो शिवसुख कर्म दहीने	सखी ६
खमत खामणा दीलथी करवा	
जुना पापना लेपने हरवा	
करो ए करणी भवजल तरवा	सखी. ७
मैत्री भावने दीलमां जगावो	
लक्ष चोराशी जीव खमावो	
जेथी पाछळ नहि पस्तावो.	सखी. ८

बारसा सूत्रनी पवित्र वाणी
 लक्ष्मण सूरीना मुखर्षी कहाणी
 तम कीर्ति त्रिदिने गवाणी. सखी. ९

गहुंली नं० १९

(राग-माहं वतन हा वतन)

मारा प्रणाम हां मारा प्रणाम
 सुरीजी स्वीकारो मारा प्रणाम
 आयोने सखीओ गुरुजी पधार्या
 लक्ष्मण सूरी जेनु रुहु छे नाम मारा०
 इंदोर शहेरमा गुरु मल्याथी
 फल्या मनोरथ मारा तमाम मारा०
 ब्रह्मचर्य तेज जलहलतु जेथी
 आकाशे गया रवी शशी थई श्याम-मारा

अतुल धीर गंभीरता जेमां
 शुभ लक्षण अंगे छाजे तमाम मारा०
 परिसह बावीश आकरा सहेता
 मोह साथे जेने मांझ्यो संग्राम मारा०
 आत्म दशामां लयलीनता लागी
 काढे छे पर परिणती परीणाम मारा०
 त्रिविध तापने दुर हटावे
 भवि जीवोको देता आराम मारा०
 जाणी पोताना कृपा करीने
 मुक्तिपुरीमां करावो विश्राम मारा०
 देश विदेशमां नाम गवाये
 कीर्ति फेलाणी छे ठामो ठाम मारा०

गहुंली नं० २०

(राग सजनी मोरी)

गुरु मारा लक्ष्मण सूरिजी रायारे

गुरु मारा बाल पणे संयम पायारे

गुरु मारा आगम अमृत पावेरे

गुरु मारा अज्ञान तिमिर हटावेरे

गुरु मारा पंच महाव्रत धारीरे

गुरु मारा पड जीव रक्षाकारीरे

गुरु मारा स्यादवाद शैलीना जातारे

गुरु मारा एतो साचा पिता मातारे

गुरु मारा शुद्ध परूपणा करनारारे

गुरु माग अंग उपाग जाणनारारे

गुरु मारा गुरु आज्ञा ए विचरतारे

गुरु मारा मिथ्या ज्ञान दूरनारारे

(२०२)

गुरु मारा आत्म स्वरूपे रमतारे

गुरु मारा काम कषाय ने शमतारे

गुरु मारा इंद्रिय विषयने दमतारे

गुरु मारा पाले संयम छोडी ममतारे

गुरु मारा जेने गुरू गुण गमतारे

गुरु मारा ते दुर्गतिमां नही भमतारे

गुरु मारा कीर्ति तणा आधारारे

गुरु मारा भवि जीवोने तारनारारे

गहुली नं० २१

(राग-प्रभु दरबारे आवो)

गुरु मंदिरे आवो धर्म भावने जगावो

मारी बहेनो गुरुजीने वंदो भावथी

वीर प्रभुनी वाणी गणधरोथी गुंथाणी मारी

सुणी मधुरीवाणी करो आतमकमाणी मारी

आत्मने हिन जाणी ग्रहीले हवे शाणी मारी
 खरी धर्मनी जुगानी छोडीदे हेवानी मारी
 दया दीलमाधारी बनो विवेकविचारी मारी
 जूठ मायाने चोरी मुक्तीदो हवे कोरी मारी
 दान शिथिल तपभाव दीलमां खुबचसाव मारी
 विषय कषायने वारो मोहादिदुतने मारो मारी
 ज्ञान घटने पीवो गुरु मल्याछे दीवो मारी
 शुद्धतत्त्वने समजावे ज्ञानपीयूष पीलावेमारी
 जरा अवस्था आवे जरजरीया खवगने मारी
 घात तडाका भूको गुरु चरणेजई झुको मारी
 जोनरभवमाहीभूलशोतो नरकोमाहीरूलशो,
 वधशो कीर्ति जगमां जो धर्म रगरगमा
 मारी जेनो गुरुजीने वढो भावधी ॥

गहुंली नं. २२

(राग-वीर तारु नाम व्हालुं लागे)

- गुरुजीनी चाणी मीठी लागे
 हो बेनी ज्ञान भरपुरा,
 लक्ष्मण सूरिजी ज्ञान भरपुरा
 विद्वत्तामां न अधुरा हो बेनी १
- पंच महाव्रत पालणहारी,
 त्रण गुप्तिने वधारी होवेनी २
- उपदेश आपी केई प्राणी तार्या,
 भवजल पडता उगार्या होवेनी ३
- दीव्य ज्ञानर्ता ज्योत जगावी,
 शासन सेवा बजावी हो बेनी ४
- व्याख्यान सुणवा सौ कोई आवे,
 गुरु गुण रंगे गावे हो बेनी ५

श्रद्धा भक्तिथी गुरु पद ध्यावो,	
जेथी शिर सुख पावो हो वेनी	६
म्हेसाणा गाममां गुरुश्री पसाये,	
चोथो आरो वर्ताये हो वेनी	७
स्यादवाद गैली स्पष्ट समजावे,	
साचा मार्गने बतावे हो वेनी	८
सुरीश्वर पदने गुरुश्री पामी,	
कीर्ति जगमां जामी हो वेनी	९

गहुंली नं. २३

(राग-आवो आवो पासजी)

सखी सुरीराजनी वाणी सुणीयेरे,
 सुणी कर्म मलोने हर्णाये सखी
 गुरु वाणी अति मीठी लागेरे,

- शुद्ध आत्म भावना जागेरे
भवो भवना पातक भांगे, सखी १
गुरु रोजनुं शरणुं साचुरे
भवो भव सेवा याचुरे
मोह मायामां नहि राचुं सखी २
निंदा विकथा परिहरीएरे
धर्म ध्यानमां चितने धरीएरे,
नहि अटके नाव भवदरीये, सखी ३
गुरु वाणी अंतरमां धरीयेरे,
मिथ्या मति दूरे हरीयेरे
समकितनी शुद्धि करीये, सखी ४
गुरु वाणी कदी नवि चुकीयेरे,
देव देवलाने नवि झुकीयेरे
क्रोध मानने बाली मुकीये, सखी ५
अभक्ष्य वस्तुओ तजीयेरे,

परमात्मा दशाने भजीयेरे

शील व्रत शणगारने सजीये, सखी ६
इन्द्रिय विषयोने दमीयेरे,

काम कषाय ने नित शमीयेरे,
समता रसमा नित्य रमीये, सखी ७

सुरी लब्धिनी पाट दीपावीरे,
सुरीश्वर पदने सोहावीरे,

जगमा कीर्ति अति फेलानी, सखी ८

गहुंली नं. २४

(वीर कुंवरनी बातही केने कहीये)

लक्ष्मण सूरिजी की देशना बहु सारी

हारे भव जल यी तारणहारी

हारे थाय हर्षित नरने नारी

हारे आत्म सुखकार लक्ष्मण सूरि. १

बाल पणामां सूरिजी संयम चरीया

हांरे संसार अटवी उलंघ्या

हांरे गुरू गुण गणोथी भरीया

हांरे ज्ञान ध्यान सार. लक्ष्मण सूरि. २

पंच महाव्रत सूरिजी शिरे धरता

हांरें पड कायनी रक्षा करता

हांरे मोह मायाने परि हरता

हांरे लोभथी अतिदूर लक्ष्मण सूरि. ३

वी प्रभुजीनी वाणी सुणावे

हांरे भव कुप मां पडता वचावे

हांरे शुद्ध समकित हृदये ठावे

हांरे आनंद न मांय. लक्ष्मण सूरि ४

गुंजा मरूधर देशे विचरता

हारे जाँहर प्रवचन करता
 हारे जैन जैनतर मन हरता
 हारे करता उपकार लक्ष्मणसूरि ५
 शासनमा गुरु कोहीनुर जाग्या
 हारे यश वाजा तेहना वाग्या
 हारे जोड जमाना वादी भाग्या
 हारे वरते जयकार लक्ष्मण सूरि, ६
 सहस्र अठार सीलाग रथ धारा
 हारे गोचरी दोपने टालनारा
 हारे समय शुद्धि करनारा
 हारे ममताना भंडार, लक्ष्मण सूरि ७
 शिष्य ममुदाय मनहर सोहे
 हारे जुना कर्मना लेप निछोहे
 हारे सा संघना मनडा मोहे
 हारे कीर्ति उज्जल
 लक्ष्मण सृष्टीजीनी देशना बहुसारी ८

गहुंली नं० २५

(राग भरतनी पाटे भूपतिरे)

वंदो लक्ष्मण खुरीराय तेरे

हर्षे सौ नरनार सलुणा

महा भाग्ये गुरुजी मल्यारे

गुरु गुणना भंडार.

सलुणा०

भव सागर श्री तारवारे

गुरुजी नाव समान.

सलुणा०

आत्म ध्यानमां मग्न छेरे

स्वपर शास्त्रना जाण.

सलुणा०

अम उपर कृपाकरीरे

पधार्या गुरु राज

सलुणा०

आनंद अति वर्तावीयोरे

सार्या सघळां काज.

सलुणा०

एकी धारा देशना देईरे
करता मन रंजन.

सलुणा०

समिति गुप्ति हृदये धरीरे
करता ज्ञान अंजन.

सलुणा०

वाचना आपी रुडी परेरे
थाये समकित शुद्ध

सलुणा०

मोह मुमट भन रणमारे
हरावे करी शुद्ध

सलुणा०

प्रमत्त दशा दूर करीरे
करता आत्म शुद्धि.

सलुणा०

न्याय शास्त्रमा प्रवीण छेरे
ताकिऊ छे अति बुद्धि

सलुणा०

शरणु साचु गुरुजी तणुंरे
याचो मनो भव सेन.

सलुणा०

शुद्ध भावे सेवा करीरे	
ल्यो शिवपुर मेव.	सलुणा०
गुरु वाणी सुणी केई तयारे	
षामे सुख अपार.	सलुणा०
जगमां कीर्ति घणी वधेरे	
न पडे दुःख लगार.	सलुणा०

गहुंली नं० २६

(राग-में वृंढ फिरा जग सारा जग सारा)

गुरु वाणी हितकारी हितकारी
भविजन सुणो भावथी.
मोह तरंगने दबाव नारी
ममता नारीने हटावनारी
भवजलथी तारनारी तारनारी भविजन. १

સમતા રસનો રૂપાલ કરાવે
 જ્ઞાનામૃત ને હૃદયે પાવે
 આતમ ઉદ્ધામ કરનારી કરનારી ભવિજન, ૦
 પેયાપેયનું જ્ઞાન કરાવી
 દુર્ગતિ પડતા સૌને વચાવી
 અત્રાન અધેર હરનારી હરનારી.
 ભવિજન ૦ ૩

કામ કપાળ ને સમાવનારી
 નીતિ અનીતિને વતાવનારી
 વલેગ કેંકાજ મારનારી મારનારી
 ભવિજન ૦ ૪

મોરો મેઘ જોડે જિમ હર્પે
 તિમ ગુરુજીની બાળી વર્પે
 દર્પે મુળી નરનારી નરનારી ભવિજન ૦ ૫
 પૃથ્વ પાપનો રસનો વતાવે

जीवाजीवनं स्वरूप बतावे

कुमति ने वारनारी वारनारी.

भविजन० ६

देव गुरुने धर्मना मर्म

वतावी कापे कठिनकर्म

गुरु साचा उपकारी उपकारी. भविजन० ७

लक्ष्मण सूरजीजी वाणी लाजे

तस कीर्ति दस दिसे भाजे

लेवा शिव वरनारी वरनारी. भविजन० ८

गहुंली नं० २७

(तुम्हने मुजको प्रेम सिखाया)

लक्ष्मण सूरजीजी मेरे मन में भाया

माता धाधु बाई कुंखे जाया

पिता मुलचंद भाई कुल सोहाया

घर घर आनंद मंगल गाया

चंदन हो चारवार सुरिजी

चंदन हो चारवार.

१

परमत वादी दूर भगाया

धर्म जगाया ज्ञान बताया

चंदन हो चारवार सुरिजी

चंदन हो चारवार.

२

ज्ञान पीयूष का प्याला पिलाया

मिथ्या तिमिर को जड से जलाया

समकित के दातार सुरिजी

समकित के दातार.

३

ज्ञान सारंभ को जगमें फैलाया

मर्वध तराया दुःख से बचाया
 वंदन हो वारंवार सुरीजी

वंदन हो वारंवार.

४

मोक्षपुरीका रस्ता दिखाया

कर्म हटाया भविजन तार्या

सच्चे हो तारणहार सुरीजी

सच्चे हो तारणहार.

५

सुवर्ण सम है दीपती काया

छोड़ माया और संयम पाया

समकित के दातार सुरीजी

समकित के दातार.

६

तत्त्व त्रयीका स्वरूप बताया

तान लगाया मोह भगाया

फैली है कीर्ति अपार सुरीजी

७

(२१७)

गहुंली नं० २८

विहारनी

(राग-नझ्झ)

गुरुजी विनयु आजै

स्वीकारो विनती मारी. अंचली०

सुणी विहारनी बातो

हृदयमां थाय आघातो

जानी छो आप गुरुराया स्वीकारो० १

अमृत सरसी मीठी बाणी

हने क्वां सुणशु गुरुजी

दया दीलमा जरा आणी स्वीकारो० २

धरनुं काम झट करता

गुरु व्याख्यान सुणवाने

गुरुनी तो जाय छोटिने स्वीकारो० ३

पाछल शुं थाशे लोकानुं

जरा विचारो दील गुरुजी

विवेक नयनोधी जोइने स्वीकारो० ४

चीत्या चर्पोना चर्पो पण

नथी चोभासुं थयुं आवुं

रमतां आनंद लेहेरोसां स्वीकारो० ५

आश्रय लीधो अमे आपनो

सूकीने कयां हवे जावो

शांति राखी थोडा दिवसो स्वीकारो० ६

शरण लइशुं हवे कोनुं

सुणशुं कयां हवे वाणी

धर्मनी गोष्टी कयां करशुं स्वीकारो० ७

सुपात्रे दान कयां दइशुं

धर्म लाख कयांथी हवे लइशुं

वंदन करवाने कयां जइशुं स्वीकारो० ८

गुरु निहारथी संधमा

यशे दुःख बहुभारी

कृपा नजरोयी जोइने स्वीकारो० ९

कुमार्गे पडता जीवोने

वचापणे फोण हवे गुरुजी

उजवळ कीर्ति गुरु श्री नी स्वीकारो० १०

पाळकनी विनती मानी

रोकाई जाजो हवे गुरुनी

वधु रुहुं शु हवे ज्ञानी स्वीकारो० १२

गहुंली नं २९ रवागत गीत.

(राग-वीर कुंवरनी वातडी केने उद्दीये)

धन्य घडी धन्य दिवस आज

हारे मलीया छरि शिरताज ।

हारे फळीया मनोरथ आन

हारे जानव अपार धन्य १

परिवार साथे सूरिजी पधारी

हांरे सौ संघना हर्ष वधारी

हांरे भव कुंभमां पडता उगारी

हांरे गुरु तारण हार धन्य २

विचरंता विचरंता इहां आव्या

हांरे कैई वादीओ हटाया

हांरे युक्तिओ देइ समजाव्या

हांरे षड शास्त्रना जाण धन्य ३

सूरिजी नी वाणी, लागे अति रसाली

हांरे कर्मोने नांखे बाली

हांरे मोह सायाने दूरे टाली

हांरे आपे शिवराज धन्य ४

तपगच्छ गर्भने दिनमणी सोहे

हारे भविजनना मनडा मोहे
हारे अष्ट कर्म लेप विछोहे

हारे लेवा शिपराज धन्य ५
रत्नाकर सम सूरिजी गंभीरा
हारे मेरु सम सूरिजी धीरा
हारे शासनमा सूरिजी हीरा

हारे समता अजब धन्य ६
अग्यार अंग चित धरनारा
हारे मिथ्या मति हरनारा
हारे ज्ञानामृतने देनारा

हारे प्रणमो धरी भाव धन्य ७
लब्धि सूरिजीनी पाटे विराजे
हारे ज्ञानादि रत्नोथी छाजे
हारे जस कीर्ति त्रिदीवे गाजे
हारे बहु बार हजार धन्य ८

गहुंली नं. ३०

वीर जीन जन्म दिवस.

(राग—सिद्धाबलना वासी)

वीर जीन केरो जन्म

भवीयां हर्ष अपार ॥

माता त्रिशला देवी जाया

क्षत्रिय कुलमां जन्म पाया

पीता सिद्धारथ जाण

भवीयां हर्ष अपार १

छप्पन दिग्गुमरी हुलराया

नर सुरासुर गुण गाया

करे ओछव अती ठाठ

भवीयां हर्ष अपार २

चोसठ इन्द्रो प्रेमे आवे

सुरगीरि पर प्रभुने ठावे
करे जन्मोत्सव,

भवीयां हर्ष अपार ३
आठ जाति कलजे नगवावे
तिहां प्रभुजी मेरु कंपावे
इन्द्र करे विचार

भवीयां हर्ष अपार ४
त्रण लोक प्रकाशे भरीयुं
नारक पण क्षण सुखने वरीयुं
कोइ रहे न उदास

भवीयां हर्ष अपार ५
उत्तरा फाल्गुनी चंद्रमां आवे
चैत्र सुदी तेरम दिन जावे
उच्च ग्रहोनो योग

भवीया हर्ष अपार ६

नंदीश्वरमां करी सहभारी

देव देवी गये हर्ष अपारी
करी विविध नाट्य

भवीयां हर्ष अपार ७
आत्म कमलमां लब्धि आपो
सूरी लक्ष्मण कीर्ति दुःखकापो
व्यापो रग रग नांय

भवीयां हर्ष अपार ८

विहारकी गहुली ३१

(राग-शांतीसुरद्व तमारी जोतां)

गुरुजी मारा विनती मारी,

स्वीकारो उरधरी धरीने.

वीरमगामना संघनी विनती,

स्वीकारो उरधरी धरीने.

समकित निर्मल करवासारुं,
 आपने दीलमा गुरुजी धारुं,
 नहीं रह्यु कथां हवे वारुं,
 करावो आनंद रही रहीने गुरुजी. १

गुरुजी गुरुजी कोने कहीशुं,
 शरणु हवे अमे कोनु ग्रहीशुं,
 चाच्या आपतो अमने मूकीने
 वंदन करवु कथा बुकी बुकीने गु २

दान सुपात्रमा हमेशादेता,
 लाम अमे भक्ति करीने लेतां
 घहोरवा माटे हवे कोने,
 विनती करशुं लळी लळीने गुरुजी ३
 अडधा घरना कामने छोडी,
 आपता अमे अहीआ दोडी.

छुटे कंपारी सौना हृदयमां,
विहार वातो सुणी सुणीने गुरुजी. ४

मीठी अमृत देशना आपनी
सौना हृदयमां लागती प्यारी
धन भाग्य मारा गुरुजी आवा
मलशे क्यारे फरी फरीने गुरुजी. ५

आपनु चोमासुं आनंदकारी
नर नारी मन हर्ष अपारी
वाणी सुणवा आवता सुखेथी
दीलमां हर्ष भरी भरीने गुरुजी. ६

जैनेत्तरोपण सुणवा आवे
गुण तमारा भावथी गावे
उद्योत थाशे जैन धर्मनो
रही जावो कृपा करी करीने गुरुजी. ७

हये उपाश्रय सुनो लागशे

सजय अमारा कोण कापशे

दया लाइने जरा मनमां

आप जुवो पाछु वळी वळीने गुरुजी ८
सुघरशे केई भवि प्राणी

आपनी भीठी सुनी वाणी
बधु जाणोछो आप जानी

बधु कहुं शुं फरी फरीने गुरुजी ९
मिनती ताळरुनी स्वीकारी

विहार करशो नदि उपकारी
कीर्ति फेलाशे बहु तमारी

मिनती मानो रही रहीने गुरुजी १०

श्री सिद्धचक्रजी का स्तवन.

सिद्ध चक्र मुज दिल में भाया

कल्प तरु सुखकार सोहाया

नव पद शाखा जिसकी सवाया

सुर नरवर किन्नर गुण गाया

तुमही जग विख्यात. तारक० १

बारह अंगमें तुमही छाया

माया नसाया शिव वसाया

तेरो ही ध्यान प्रधान. तारक० २

सार सार सब तत्व मिलाया

श्री सिद्ध चक्र के स्थान ठराया

अव्वल है जग सार. तारक० ३

अरिहंत सिद्ध आचारज सोहे

वाचक मुनिपद मनको मोहे

दर्शन ज्ञान निधान. तारक० ४

आत्म मन में कमल बनाकर

अष्ट पांखड़ी ए नवपद ध्याकर

तप चरण अवदात

जगमें नवपद ए अष्टदात.

५

आत्म कमल में तत्त्व प्रसाना

लब्धि मीलाना गुण को खीलाना

जपी 'सोहं' पदजाप. भवीयां ६

सिद्धचक्रजी का स्तवन.

(राग--काली कमली, वाले)

सिद्ध चक्र को प्रणमो धरी हर्ष अपार

पहेले पद अरिहंत नमंता

सिद्ध प्रभु का जाप जपंता

न पडे दुःख लगार.

धरी० १

पंचाचार ने पाले पलावे

आचारज पद सेवो आवै

शासन के शिरताज.

धरी० २

वाचक वर्ध वांचना आपे

शिष्यों ने सद सार्ग मां स्थापे

सुमति के दातार.

धरी० ३

साधु पद सेवो सदा आवै

आत्म रमणमां जे नित्य माले

संयम पालण हार.

धरी० ४

दर्शन ज्ञान चारित्र आराधी

स्व आत्म का कारज साधी

तपो तप सुखकार.

धरी० ५

इम नवपद का ध्यान धरेंता

आराधन शुद्ध भावे करता

वरो शिव सुखसार

धरी० ६

श्री श्रीपाळने मयणां सुंदरी

एक चित्ते आराधन करी

पाया सुख अपार.

धरी० ७

आत्म कमलमां लब्धि दाता

सूरि लक्ष्मण कीर्ति गुणगाता

वर्ते जय जय कार.

धरी० ८

भोपावर तीर्थ स्तवन.

(राग-तुमने मुजको प्रेम सीखाया)

शांति जिनंद प्रभु दर्शन पाया

दीलमें आनद रूच गनाया

कर्म कलंक को दूर अगाया
ज्ञान दीखाया भवसे तराया

तुमही तारण हार जीनजी १

तुमही तारण हार
काउसग मुद्राए प्रभु ठाया
दील मोहाया भविजन आया

तुमही तारण हार जीनजी २

तीरथ भोपावरमें सोहाया
नाम गवाया अचिराके जाया

तुमही तारण हार जीनजी ३

पट् खंड त्यागी संयम पाया
कर्म खपाया मुक्ति सीधाया

तुमही तारण हार जीनजी ४

क्रोध मान लोभ टाली माया

(०३३)

राग मीटाया द्वेष जलाया

तुमही तारण हार जीनजी ५

आत्म कमल लब्धि विकसाया

सूरी लक्ष्मण कीर्ति गुणगाया

तुमही तारण हार जीनजी ६

तुमही तारण हार

श्री राजगढ महावीर जिन स्तवन

(राग-वर्द्ध प्रेम वश पातलीया)

भजो वीर जिनंद सुप्रकारी

जस मूरति अति मनोहारीरे. भजो

महा पुण्ये प्रभु दर्शन पाया

दीन दर्प अति उभराया

सवि कर्म कलंक हटाया
गुण गावे सुरासुर, नर नारीरे. भजो १

ज्ञान दिवाँकर गुण रत्नाकर
समकित के दातारी
मोह सुभट को मारी
दीये शिवसुख आनंदकारीरे. भजो २

निशला नंदन भव भय भंजन
वदन शशी सम सोहे
भविजन मनकु मोहे
जिन दर्शन अँघ घर्षण करीरे, भजो ३

इंद्रे प्रभुको सुरैंगीरि ठाया
अंगुठे मेरु कंपाया

शुक्रकी शला मीटाया
प्रभु अनंत शक्ति के धारीरे, भजो ४

घोर उपमर्गो प्रभु महके
केवल ज्ञान निपाया
पाति अपाति जलाया
प्रभु छुट् अनंत गुण धारीरे, भजो ५

आत्म कमल में जीन गुण प्याया
निज लब्धि विक्रमाया
सुरी लक्ष्मण पयाया
तम कतिनि वरे शिवनागरे, भजो ६

(२३६)

मांडवगढ शांतिनाथजी स्तवन

(राग-चंदा प्रभुजी से ध्यानरे)

शांतिजिणंद सुखकाररे भवि भेटो हृदय से
भवि भेटो हृदयसे

मूरति प्रभुनी दिन मणि सोहे
मिथ्या तम हरनारीरे. भवि०

मांडवगढ पर आप बीराजो
प्राचीन बिंब सोहायरे. भवि०

सोहे कमलसम विकसित मुखडुं
नयनानंद करनारुरे. भवि०

महा भाग्ये प्रभु दर्शन पाया
गाया सुर नर नाररे. भवि०

- तारक वीरुद प्रभुजी तमारुं
कीजे सेवक उद्धाररे. भवि०
- भव वन भटक्यो लटक्यो नरके
अत्र तुमही आधाररे. भवि०
- काम कपायने दूर निवारी
दीजे शिव सुख साररे भवि०
- दूर देश से यात्रिक आवे
दर्शकरी हरखायरे. भवि०
- आत्म कमलमे लडिध आपी
वेडाकरो भव पाररे. भवि०
- सूरी लक्ष्मण कीर्ति गुण गावे
भावे शीघ्र नमायरे भवि०

श्री अक्षय निधि तप स्तवन

(राग-पदम प्रभु प्राण से प्यारा)

अक्षय निधि श्रेष्ठ तप प्यारा

सेवो वधे भावनी धारा० अंचली.

पर्युषण पर्व सुखकारा

अक्षय निधि तपना द्वारा

आराधो भावे शिवकारा

देखाडो मोक्षना द्वारा. अक्षय. १

श्रावण वदि चौथथी जाणो

संवत्सरी काल परिमाणो

परम पद अक्षय धारा

मळे शिव लक्ष्मी सुखभारा. अक्षय. २

पूजा वर ज्ञाननी कीजे

श्रुत काउसग चित्त दीजे

रत्नो कुंभ शक्ति अनुनाग
करो स्वस्तिक मनोहारा. अक्षय. ३

नमो नाणस्मन्तु गणणु
गणो भवि ? दो सहन पारा
वर्ष एग चार तक करलो
यना मनि मयथकी पारा. अक्षय. ४

करम बंध जेह मत्सरथी
थयो ते जाये ते तपथी
करी महोच्छ्रय अतिमारा
पागण दिन उजयो प्यारा. अक्षय ५

आत्म तमन्द हितकारा
तपो ए तप करम पारा
निधि नव लब्धि आधार
थये जीव कर्मथी न्यारा. अक्षय ७

पू० पा० आचार्य श्रीमद्

विजय लक्ष्मणसूरीश्वरजी महाराज सा.

के सदुपदेश से निम्न मुताबिक गृहस्थों
तरफ से सहायता प्राप्त हुई है

शा. सरदारमलजी धनालालजी ४००

शा. दलीचंद वीरचंद समरथमल

प्रतापजी ४००

भंडारी वखतमल उमेदमलजी २००

शा. मणीलाल गुणचंद राधनपुरवाला ४००

शा. छगनलाल मीठालाल ३००

शा. नसराजजी रुपचंदजी

रोयडावाला १००

कीमत से

....

२००

टोटल २०००

